समान अने सकल पापने दूर करनारा एवा (वीर
के०) श्रीमहावीरस्वामीने (नमिऊण के०) नम
स्कार करीने (जह के०) जेम (पुव्वसूरीहिं के०
सुधर्मस्वाम्यादिक पूर्वसूरिओए (भणियं के०) पोता
नां आगममां प्रगट कर्युं छे तेम हुं पण (अबुहबोह
के०) तत्त्वविचारने विषे अज्ञानी जीवोने बोध
थवाने अर्थे (किंचिवि के०) लेशमात्र (जीवसरूवं
के०) जीवनुं स्वरूप (भणामि के०) कहुं छुं ॥१॥

हवे जीवना भेद कही बतावे छेः—

जीवा मुत्ता संसा,-रिणो अ तस थाव-
रा अ संसारी ॥ पुढवि जल जलण
वाऊ, वणस्सई थावरा नेआ ॥ २ ॥

गाथा २ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

जीवा-जीव.	पुढवि-पृथ्वीकाय.
मुत्ता-मुक्ति पामेला, मुक्त.	जल-अपकाय.
संसारिणो-संसारी जीवो.	जलण-तेउकाय.
अ-अने.	वाऊ-वायुकाय.
तस-त्रस (हाले चाले ते).	वणस्सई-वनस्पतिकाय.
थावरा-स्थावर (स्थिर रहे ते).	नेआ-जाणवा.
संसारी-संसारी.	

अर्थः–(जीवा के०) जीव ते एक मुक्तिना तथा वीजा संसारी. ए वे प्रकारना छे. तेउमांना (मुत्ता के०) जेउ सकल कर्मरूप पटलोनो क्षय करीने मुक्तिपदने पाम्या छे तेउ सिद्ध जीवो कहेवाय छे; (अ के०) तथा (संसारिणो के०) जेमां संसृतिने पमाय छे ते संसार कहेवाय छे, एवा संसारनी नरकादि चार गतिउमां जेउ भ्रमण करे छे तेउ संसारी जीवो कहेवाय छे. ते (संसारी के०) संसारी जीवना एक (तस के०) त्रस (अ के०) वली वीजा (थावरा के०) स्थावर, ए वे प्रकार छे; तेउमांना स्थावर जीवोना पांच प्रकार छे ते आ प्रमाणेः–एक (पुढवि के०) पृथ्वीकाय, वीजा (जल के०) पाणी ते अप्काय, त्रीजा (जलण के०) ज्वलन ते अग्निकाय, चोथा (वाऊ के०) वायुकाय, पांचमा (वणस्सई के०) वनस्पतिकाय, एवी रीते ए (थावरा के०) स्थावर जीवो पांच प्रकारना (नेया के०)जाणवा ॥२॥

हवे ए स्थावर जीवोना भेदमां अनुक्रमे प्राप्त थयेला पृथ्वीकाय जीवोना भेद कहे छेः–

फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल हरि-

याल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ धाउ सेढी, वन्नि अ अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥ अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पाहाण जाइओ णेगा ॥ सोवीरंजण लूणा,-इ पुढविभेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

गाथा ३ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

फलिह=स्फटिक रत्न.
मणि=चंद्रकांतादिक मणि.
रयण=रत्न.
विद्रुम=परवालां.
हिंगुल=हिंगलो.
हरियाल=हरताल.
मणसिल=मणसिल.
रसिंदा=पारो.
कणगाइ=कनकादि (सोनुं विगेरे).
धाउ=धातु.
सेढी=खडी माटी, चाक.
वन्नि=लाल रंगनी माटी, हरमजी.
अरणेट्टय=पाषाणना कटकानी साथे मळेली धोळी माटी.
पलेवा=एक जातिनो पाषाण.

गाथा ४ थीना छूटा शब्दना अर्थ.

अब्भय=अबरख (पांच वर्णनो).
तूरी=एक जातिनी माटी.
ऊसं=खारो.
मट्टी=माटी.
पाहाण=पाषाण, पत्थर.
जाईओ=जातिओ.
णेगा=अनेक.
सोवीरंजण=सुरमो.
लूणाइ=सिंधव विगेरे.
पुढवि=पृथ्वी काय.
भेआइ=भेदो.
इच्चाई=इत्यादि.

अर्थः—(फलिह के०) स्फटिक प्रसिद्ध छे, (मणि के०) मणि ते चंद्रकांतादिक अथवा जे समुद्रमां उत्पन्न थाय छे ते, तथा (रयण के०) रत्न ते वज्र कर्केतनादिक अथवा जे खाणमां उत्पन्न थाय छे ते, (विद्रुम के०) परवालां अथवा विद्रुम, (हिंगुल के०) हिंगलो, (हरियाल के०) हरताल, (मणसिल के०) मणसिल, (रसिंदा के०) पारो अथवा रसेंद्र, (कणगाइ धाउ के०) कनकादि धातु सात छेः—सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, कथीर, जसत, सीसुं तथा लोढुंः ए अग्निसंयोगना अभावे पृथ्वीकाय छे अने अग्निसंयोगे तेउकाय छे, (सेढी के०) धोळी माटी अथवा खाय कहे-वाय छे ते, (वनि के०) हरमची अथवा लाल रंगनी माटी थाय छे ते, (अरणेट्टय के०) पाषाणना कटकानी साथे मळेली धोळी माटी थाय छे ते तथा (पलेवा के०) ए एक जातिनो पाषाण छे ॥ ३ ॥ (अब्भय के०) पांच वर्णनो अभ्रक, ते सोनी लोकोने सोनुं तपाववाना उपयोगमां आवे छे अथवा वैद्य लोको घणी भस्म विगेरे करीने औषधिमां वापरवाने कामे लगाडे छे, (तूरी के०) एक जातिनी माटी छे, ते कापडने पाश देवाना काममां

आवे छे, (ऊसं के०) ए पण एक जातिनी माटीज छे, पण क्षार नूमिमां उत्पन्न थवाथी क्षार अथवा खारो ए नामे उंलखाय छे. एवी रीते (मट्टी के०) माटी अने (पाहाण के०) पाषाण, ए वे पदार्थोंनी काली, नीली, राती, पीली अने धोली एवी (जाइ उ ऐगा के०) अनेक जातिउ छे ते वधी लेवी तथा (सोवीरंजण के०) ए सुरमो एवे नामे उंलखाय छे ते आंखमां अंजाय छे. (लूणाइ के०) सिंधव, साजी, विरुलवण, काचलवण तथा समुड्लवण, (इच्चाई के०) इत्यादि, (पुढविन्नेआइ के०) पृथिवीकाय संसारी जीवोना न्नेद कहेवाय छे ॥ ४ ॥

हवे वादर अप्काय जीवोनुं वर्णन करे छेः—

न्नोमंतरिक्खमुदगं, उसा हिम करग हरितणू महिआ ॥ हुंति घणोदहिमाइ, न्नेआ ऐगा य आउस्स ॥ ५ ॥

गाथा ५ मीना वूटा शब्दना अर्थ.

न्नोमं=नूमिनुं.	हिम=हिम, वरफ.
अंतरिक्खं=आकाशनुं.	करग=करा.
उदगं=पाणी.	हरितणू=धान्य प्रमुख लीली वनस्पतिना अग्र नाग उपरनां पाणीनां विंडु.
उसा=उसनुं पाणी, जाकल.	

महिआ=धरसादनी फरफर, धुमरीनुं पाणी. | जेआ=जेदो.
हुंति=थाय ले. | ऐगा=अनेक.
घणोदहिमाई=घनोदधि आदि. | आउरस=अप्कायना.

अर्थः—(जोमं के०) कूपादिनुं पृथ्वीमां रहेलुं तथा शिरोपानीय, ए बधुं जूमिजल कहेवाय ले,(अंतरिक्खमुदगं के०) सरोवरादिकने विषे जे मेघनुं पाणी जराय ले ते अंतरिक्ष उदक कहेवाय ले, (उसा के०) उसनुं पाणी ए तुषार अथवा ऊाकल पण कहेवाय ले, (हिम के०) हिम पडवाथी जे बंधाइ जाय ले ते पाणी, (करग के०) वर्षाऋतुमां मेघ पडतां वायुना योगे पाणी बंधाइ कविन थइने धोला पाषाणना कटका जेवा पृथ्वी उपर पडे ले ते करा अथवा करक कहेवाय ले, (हरितणु के०) उगेला घास प्रमुख वनस्पतिना मोर अथवा जव प्रमुखनां पांदडांने ठेडे जे पाणीनां बिंडु थाय ले ते हरितनु कहेवाय ले, (महिआ के०) आकाशने विषे कोइ समये वादलां थइ आवे ले तेना योगे अति सूक्ष्म जीणी जीणी पाणीनी बूंदो पडे ले ते महिका अथवा धुमरीनुं पाणी कहेवाय ले, एवी रीते (आ—

के०) अप्कायना (घणोदहिमाई के०) जेने आधारे पृथ्वी रही छे ते घणोदधि आदि दइने बीजा पण (भेआ णेगा के०) अनेक भेदो (हुंति के०) थाय छे. ए अप्काय जीवोना भेद कह्या ॥ ५ ॥

हवे तेउकाय जीवोना भेद कहे छेः—

इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कण-
ग विज्जुमाईआ ॥ अगणिजिआणं
भेआ, नायव्वा निउणबुद्धिए ॥ ६ ॥

गाथा ६ ठीना छूटा शब्दना अर्थ.

इंगाल=अंगारानो अग्नि.	विज्जु=विजली.
जाल=ज्वालानो अग्नि.	आईआ=आदि.
मुम्मुर=भाजन्दि, नाखो.	अगणि=अग्निकाय.
उक्का=उल्कापातनो अग्नि.	जिआणं=जीवोना.
असणि=वज्रनो मार मारतां पडतो अग्नि.	भेआ=भेदो.
	नायव्वा=जाणवा योग्य.
कणग=कणीआनो अग्नि.	निउण=निपुण, सूक्ष्म.

अर्थः—(इंगाल के०) ज्वाला विनानो अग्नि, काष्ठ प्रमुख वस्तुनुं बळवुं ज्यारे थई जाय छे त्यारे अग्निनी ज्वालानो नाश थइ जाय छे, अने रक्त वर्णनी देखे प्रज्वलित बळता थइ रहे छे ते अंगार कहेवाय

छे, (जाल के०) ज्वालानो अग्नि, (मुम्मुर के०) अग्निनी ज्वालामांथी जे सूक्ष्म कण नीकले ते भ्रासद्धि अथवा जाळो कहेवाय छे, (उक्का के०) कोइक कालने विषे आकाशमांथी अग्निनी वृष्टि थाय छे ते उल्कापातनो अग्नि कहेवाय छे, (असणि के०) वज्रनो मार मारतां तेमांथी अग्नि पडे छे ते अशनि कहेवाय छे, (कणग के०) कोइक कालने विषे आकाशमां अग्निना तणखा ऊडता देखाय छे ते कनक एटले कणीआनो अग्नि कहेवाय छे, (विज्जु-माईआ के०) विजली आदिक ते वर्षाऋतु प्रमुख कोइ पण ऋतुमां ज्यारे मावठुं थाय छे त्यारे कोइ वखते आकाशथी विजली पृथिवी उपर पडे छे ते विद्युत्पात कहेवाय छे, इत्यादि (अगणिजिआणं के०) अग्निकाय संसारी जीवोना (भेआ के०) भेदो ते (निउणबुद्धिए के०) निपुण एटले सूक्ष्म बुद्धिए करी (नायवा के०) जाणवा योग्य छे ॥ ६ ॥

हवे वायुकाय जीवोना भेद कहे छेः–

उब्भामग उक्कलिआ, मंडली मह सुद्ध

गुंजवाया य ॥ घणतणुवायाईया,
भेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

गाथा ७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

उब्भामग=उद्भ्रामक एटले ऊंचे भमावे तेवो वायु.
उक्कलिआ=उत्कलिक एटले नीचो पडतो वायु.
मंडली=वंटोळीउ, मंडलिक.
मह=महावायु
सुद्ध=शुद्धवायु.
गुंजवाया=गुंजारव करतो वायु.
घणतणुवाया=घनवायु अने तनुवायु.
आईया=आदिक.
भेया=भेदो.
खलु=निश्चे.
वाउकायस्स=वायुकायना.

अर्थः–(उब्भामग के०) ऊंचो आकाशने विषे जे वायु तृणादिकना केकाने भमावे छे ते उद्भ्रामक वायरो कहेवाय, (उक्कलिआ के०) जे वायु नीचो पडतो होय ते उत्कलिक वायु कहेवाय छे, (मंडली के०) वंटोळीउं अथवा मंडलिक वायु कहेवाय छे, (मह के०) मोटा मोटा वायरो थाय ते महावायु, (सुद्ध के०) जे शनैः शनैः वाय ते शुद्धवायु, (गुंजवाया य के०) जे गुंजारव करे ते गुंजवायु कहेवाय छे, अने (घणत-णुवाया के०) जे वे वायुने आधारे नरक देवलोकादि रहेलां छे ते एक घनवायु तथा बीजो तनुवायु कहेवाय

छे, (श्चाईया के०) इत्यादिक (खलु के०) निश्चे करी (वाउकायस्स के०) वायुकाय संसारी जीवोना (जेया के०) जेदो जाणवा. ए प्रमाणे ठ गाथाए करी पृथिवी, श्चप्, तेज तथा वायुकायना जेद कह्या ॥ ७ ॥

हवे वनस्पतिकायना जेद कहे छेः—

साहारण पत्तेश्चा, वणस्सइ जीवा
इहा सुए जणिश्चा ॥ जेसिमणंताणं
तणु, एगा साहारणा तेक ॥ ८ ॥

गाथा ८ मीना बूटा शब्दना श्चर्थ.

साहारण=साधारण.
पत्तेश्चा=प्रत्येक.
वणस्सइ=वनस्पतिकाय.
जीवा=जीवो.
इहा=बे प्रकारना.
सुए=सिद्धांतने विषे.
जणिश्चा=कहेला छे.
जेसिं=जेमनुं.
श्चणंताणं=श्चनंत जीवोनुं.
तणु=शरीर.
एगा=एक.
साहारणा=साधारण.
तेक=तेने.

श्चर्थः—(वणस्सइ जीवा के०) वनस्पतिकाय जीवो ते एक (साहारण के०) साधारण श्चने बीजा (पत्तेश्चा के०) प्रत्येक, ए (इहा के०) बे प्रकारना (सुए के०) सिद्धांतने विषे (जणिश्चा के०) कहेला छे.

तेउमां (जेसिमणंताणं के०) जे अनंत जीवोनुं (त एगा के०) एक शरीर होय (तेऊ के०) तेने (साहारण के०) साधारण वनस्पतिकाय जीवो जाणवा ॥ ८

हवे बे गाथाए करी ए साधारण वनस्पतिकाय जीवोना भेद कहे छेः—

कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल
भूमिफोडा अ ॥ अल्लयतिय गज्जर
मो,-त्थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ए ॥
कोमल फलं च सव्वं, गूढसिराइ सिणा-
इ पत्ताइं ॥ थोहरि कुंआरि गुग्गुलि,
गलोयपमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥

गाथा ए मीना छूटा शब्दना अर्थ.

कंदा=कंद.
अंकुर=अंकुर, फणगा.
किसलय=कुंपलो.
पणगा=पांच वर्णनी फुगी.
सेवाल=सेवाल, लील.
भूमिफोडा=बिलाडीना टोप.
अल्लयतिय=आर्द्रकत्रिक (लीलुं आदु, लीली हलदर अने लीलो कचूरो).
गज्जर=गाजर.
मोत्थ=मोथ.
वत्थुला=ए नामे शाक विशेष.
थेग=धाधुरा, थेगी.
पल्लंका=ए नामे शाक विशेष

गाथा १० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

कोमल=कोमल, जेमां बीज न थयां होय ते.
पत्तं=पत्र.
सव्वं=सर्व.
गूढ=छानी.
सिराइ=कणसला आदि.
सिणाइ=शणादि.
पत्ताइं=पांदडां.

थोहरि=सर्व जातनो थोर.
कुंआरि=कुंवार.
गुग्गुलि=गुगळ.
गलोय=गळो, गळु.
पमुहा=प्रमुख.
आइ=आदि.
छिन्नरुहा=छेद्यां थकां वाव्याथी फरी उगे ते.

अर्थः—(कंदा के०) सूरणादि सर्व जातनां कंद, (अंकुर के०) बहार नीकळेला अंकुर, (किसलय के०) सर्व जातिनां कुंपलना नवा टसा फूटे ते पातरां जाणवां.(पणगा के०)पांच वर्णनी फुगी, (सेवाल के०) जे पाणीनी उपर रंग रंगनी लील थाय छे ते, (भूमि-फोडा के०) वर्षाकाळमां छत्रने आकारे पृथ्वीमांथी नीकळे छे ते.ते घिलाडीना टोप एवे नामे ओळखाय छे. (अ के०) वळी (अल्लयतिय के०) आर्द्रकत्रिक एटले लीलुं आदु, लीली हळदर तथा लीलो कचूरो, (गज्जर के०) गाजर, (मोठ के०) मोथ, (वत्थुला के०) वथुलो नामे शाक विशेष, (थेग के०) थामुरा, थेगी,(पल्लंका के०) ए नामनुं शाक विशेष छे,

एने लोको पालखुं कहे ले ॥ ए ॥ (च के०) वद
(कोमलफलं सव्वं के०) सर्वे कोमल फल एटले जो
बीज थयां न होय अने (गूढसिराइ के०) जेनो क
सलो अथवा पोंख ठानो होय, एटले जेना कण पाध
देखाता न होय, तथा जेनी नसो अथवा सांध स्प
देखाती न होय त्यांसुधी ते अनंतकाय जाणवां,
(सिणाइ पत्ताइ के०) शणादिकनां पातरां आदि शब्
करी जारनां पातरां पण लेवां.(थोहरि के०)थोहरनी
सर्वे जाति,एमां कांटालो तथा खुरसाणी पण जाणवी
(कुंआरि के०) कुंवार थाय ले ते लोकमां प्रसि
ले,एने घरमां ऊंची टांगी होय तोपण सूकाती नथी
किंतु एना नवा मोर नीकलता जाय ले. (गुग्गुलि के०
गुगल प्रसिद्ध ले. (गलोयपमुहा के०) वल्ली गलुवे
प्रमुख एने गलु पण कहे ले, ए वल्लीने आकारे थाय
ले, ए ज्वरादिक मटाडवानी ओषधि विशेष ले. (आ
के०) ए आदे दइने बीजां पण सर्वे जे (छिन्नरुहा के०
छेयां थकां पण वाव्याथी फरीने उगे ते सर्वे साधा
रण वनस्पति अथवा अनंतकाय कहीए ॥ १० ॥

इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंत-

कायाणं ॥ तेसिं परिजाणणहं, लरकण-
मेयं सुए जणियं ॥ ११ ॥

गाथा ११ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

इच्चाइणो=इत्यादिक.	परि=सारी रीते, समस्त प्रकारे.
अणेगे=अनेक.	जाणणहं=जाणवाने अर्थे.
हवंति=होय छे.	लरकणं=लक्षण.
जेया=जेदो.	एयं=आ.
अणंतकायाणं=अनंतकायना.	सुए=सूत्रने विषे.
तेसिं=तेमने.	जणियं=कहेलुं छे.

अर्थः—(इच्चाइणो के०) इत्यादिक (अणंतका-याणं के०)अनंतकाय जीवोना पिंम, कचूर तथा गि-रिकर्णिकादिक (अणेगे के०) अनेक (जेया के०) जेदो (हवंति के०) होय छे, (तेसिं के०) ते अनं-तकाय जीवोने (परिजाणणहं के०) सारी रीते जाण-वाने अर्थे (एयं के०) आ वक्ष्यमाण एटले जे आगल कहेशे ते (लरकणं के०) लक्षण (सुए के०) सूत्रने विषे (जणियं के०) कहेलुं छे ॥ ११ ॥ हवे अनंतकाय वनस्पतिजीवोनुं लक्षण कही बतावे छे.

गूढ सिर संधि पद्यं, समजंगमहीं-

रुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं सरीरं, तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

गाथा १२ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

गूढ=छानां.	अहीरुगं=तांतणा विनानुं.
सिर=कणसलां.	छिन्नरुहं=छेदीने वाव्याथी फ
संधि=सांधा.	रीने उगे ते
पर्व=गांठा.	तव्विवरीअं=ते थकी विपरी
समभंगं=भांग्याथी जेनां सरखां	लक्षणवाळी
बे फाळीयां थइ शकतां होय.	पत्तेयं=प्रत्येक वनस्पतिकाय.

अर्थः–(सिर के०) कणसलां प्रमुख शिर, (सं केo) सांधाउं अथवा नसो, (पर्व के०) पर्व अथव गांठा; ए त्रणे जे जातनां (गूढ के०) गुप्त छानां हो एटले दीठामां न आवतां होय अने (समभंगं के० भांग्याथी जेनां सरखां बे फाळीयां थइ शकतां होय (अहीरुगं के०)तंतु रहित जेमां तांतणा होय नहीं,(केo) पुनः एटले वळी (छिन्नरुहं के०) जे छेदीने फर वावीए तो उगे, ए सर्व प्रकारनां वृक्षोने (साहारणं सरीरं के०) साधारण वनस्पतिकायनां शरीर कहीए, अने एज अनंतकाय पण कहेवाय छे. (तव्विवरीअं

) ते पयता [illegible]

[illegible]वं के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय कहीए ॥ १२ ॥

एग सरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते

य पत्तेया ॥ फल फुल्ल छल्लि कठ्ठा,

मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

गाथा १३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

	फल फळ.
[ए]ग एक.	फुल्ल फूल.
[स]रीरे शरीरने विषे.	छल्लि छाल.
एगो-एक.	कठ्ठा काष्ठ, लाकडुं.
जीवो=जीव.	मूलग मूळ.
जेसिं-जे (वनस्पतिने.	पत्ताणि पांदडां.
तु=तो.	बीयाणि-बीज.
ते=तेने.	
पत्तेया=प्रत्येक (वनस्पतिकाय.)	

अर्थः—(एग सरीरे के०) एक शरीरने विषे (एगो जीवो के०) एक जीव (जेसिं के०) जे वनस्पतिने विषे होय (तु ते य पत्तेया के०)तेनेज प्रत्येक वनस्पतिकाय कहीए. ए प्रत्येक वनस्पतिकायना सात प्रकार छे ते आ प्रमाणेः—(फल के०) सर्व प्रकारनां फळ, (फुल्ल के०) सर्व प्रकारनां फूलो, (छल्लि के०) छा

[illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] ॥ १३ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १४ ॥

[illegible]

[illegible]

स्पतिकाय मूकीने (पंचवि पुढवाइणो के०) पांचे पृथिव्यादिक (सयल लोए के०) सकल चौद राजलोकने विषे(सुहुमा के०) सूक्ष्म (हवंति के०)होय छे, (नियमा के०) निश्चये करी.एने पांच स्थावर कहीए.ते (अंतमुहुत्ताउ के०) अंतर्मुहूर्त्तना आयुष्यवाला होय छे ने (अद्दिस्सा के०) अदृश्य होय छे, एटले चर्मदृष्टिए देखाय नहीं. तेथीज ए सूक्ष्म कहेवाय छे ॥ १४ ॥

ए पांच स्थावर सूक्ष्म अने पांच बादर मलीने दश भेद थया, अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ते बादरज होय छे,पण सूक्ष्म होय नहीं.तेथी प्रत्येक वनस्पतिकायनो एक जूदोज भेद होवाथी सर्व अगीयार भेद थाय छे. ते अगीयार पर्याप्ता तथा अगीयार अपर्याप्ता मलीने बावीश भेद स्थावर संसारी जीवना कह्या छे अने बीजा संसारी त्रस कहेवाय छे,तेना मूल चार भेद छे ते आः—बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चोरिंद्रिय तथा पंचेंद्रिय. तेउमांना प्रथम बेइंद्रिय त्रस जीवना भेद कहे छेः—

संख कवड्डय गंडुल, जलोय चंदणग
अलस लहगाई ॥ मेहरि किमि पूअरगा, बेइंदिय माइवाहाई ॥ १५ ॥

गाथा १५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संख=शंख.	अलस=अलसीयां.
कवड्डुय=कोमीर्ड.	लहगाई=लालीया जीव.
गंडुल=गंमोला.	मेहरि=मेर (लाकमामां थता
जलोय=जलो.	किमि=कृमि.
चंदणग=चंदनक, अरिया, अक्ष.	पूअरगा=पूरा.
	माइवाहाई=चूडेल आदि.

अर्थः-(संख के०) दक्षिणावर्त्त प्रमुख मोटा तथ नाना शंख होय छे ते, (कवड्डुय के०) कपर्दव अथवा कोमीर्ड अने कोमा थाय छे ते, (गंडुल के० गंमोला एने गमुता कहे छे, ए उदरमां मोटा कृमिय उत्पन्न थाय छे ते जाणवां, (जलोय के०) जलो प शरीरनी उपर फोमा वगेरे आव्या होय त्यारे तेनी उ पर मूक्याथी ते जग्यानुं रक्त शोषण करी लीए छे ते, (चंदणग के०) एने सिद्धांतोमां अक्ष एवा नामथी प्रतिपादन कर्युं छे, एने अरिया पण कहे छे, ते साधु स्थापनामां राखे छे. (अलस के०) वर्षाकालमां वृष्टि थाय छे ते वखते पृथिवीमांथी सर्पना आकारे लाल रंगवाला जे अति पातला जीवो उत्पन्न थाय छे, ते ज्यांसुधी वरसाद थतो होय त्यांसुधी ज्यां त्यां घणा

फरता दीवामां आवे छे, ज्यारे वरसाद रही जाय छे ने तमको पडे छे त्यारे तेउंमांनो एक पण दीवामां आवतो नथी. एने जूनाग अथवा अलसीयां पण कहे छे. (लहगाई के०) रोटली प्रमुख पकावेलुं अन्न वासी रही गयाथी केटलाएक काले तेमां जे जीव पडे छे तेने लालीया कहे छे, (मेहरि के०) काष्टमां जे कीमा थाय छे ते, (किमि के०) ए पण एक जातना कीमा होय छे ते उदरमां उत्पन्न थाय छे, अथवा गुदप्रदेशने विषे हरस थाय छे तथा गुंवमां वगेरेना क्षतने विषे जे कीमा थाय छे तेने कृमि कहे छे. (पूच्छरगा के०) ए जीव पाणीमां उत्पन्न थाय छे, ए जीवोनो वर्ण रातो होय छे अने मुख कालुं होय छे. एने कछी जापामां पूरा कहे छे; अने (माइवाहाई के०) मातृवाहादिक एने चूडेल पण कहे छे, मूल गाथामां आदि शब्द छे ते आदि शब्दथी मनुष्यना अंगमां जे वाला थाय छे ते पण लेवा, इत्यादिक (बेइंदिय के०) बेइंद्रिय जीव जाणी लेवा. ए जलमां तथा स्थलमां उत्पन्न थाय छे. ते अनेक प्रकारना छे. एउंने स्पर्शेंद्रिय तथा रसनेंद्रिय ए बे इंद्रियो होय छे ॥ १५ ॥

[illegible] गाथा [illegible] तेइंद्रिय जीवना भेद कहे छे.

गोमी मंकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीओ, सावय गोकीडजाईओ ॥१६॥ गद्दहय चोरकीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवालिय इलिया, तेइंदिय इंदगोवाई ॥१७॥

गाथा १६ मीना शब्दना अर्थ.

[illegible]	इयिय [illegible].
[illegible]	घयमिल्लीने घीमेल.
[illegible]	सावय सावा.
[illegible]	गोकीड गींगोडा.
[illegible]	जाईओ जातिओ.
[illegible]	

गाथा १७ मीना शब्दना अर्थ.

[illegible]	कुंथु कुंथुआ.
[illegible]	गुवालिय गवालिया.
[illegible]	इलिया ईयळ.
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible] कुंथुआ, [illegible]

घणा होय छे, ने ए कानमां पेसी जइने माणसने घणी इजा करे छे, एम कहेवाय छे, (मंकुण के०) माणसना सुवाना विछानामां अथवा खाटला प्रमुखनी नवारमां जे जीवो उत्पन्न थाय छे तेने मांकड कहे छे, (जूआ के०) यूका. ए जीवो माणसना माथाना वालमां उत्पन्न थाय छे. अथवा माणसनां कपडांमां उत्पन्न थाय छे, एटले ए माणसना शरीरना मेलमांथी उत्पन्न थाय छे, एने कछी तथा गुजराती भाषामां लीख कहे छे, ते संस्कृत लिक्ष शब्दनो अपभ्रंश छे.(पिपीलि के०) एने पिपीलिका अथवा कीडी कहे छे, एनी राती अने काळी एवी घणी जाति होय छे,ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (उद्देहिया के०) उद्देहिका,एने वाल्मिक जीव पण कहे छे. ए जीवो वृक्षमां, काष्ठमां अथवा गृहमां ज्यां ज्यां प्रवेश करे छे त्यां त्यां पोतानुं शरीर रहेवा पूरतुं घर बनावीने तेमांथी ते वृक्षादिकने खाती खाती चाली जाय छे. (य के०) वळी (मक्कोडा के०) मर्कोटिका अथवा मंकोडा,ए जीव घणुं करीने यावकना काष्ठना थडमां उत्पन्न थाय छे,अथवा गोळ प्रमुख मिष्ट पदार्थ ज्यां होय त्यां थाय छे. (इल्लिय के०) इलिका, ए जीव

हवे ये गाथा वडे तेइंद्रिय जीवना भेद कहे छेः-

गोमी मंकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीओ, सावय गोकीडजाईओ॥ १६॥ गद्दहय चोरकीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवालिय इलिया, तेइंदिय इंदगोवाई॥ १७॥

गाथा १६ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

गोमी=कानखजूरा.	इल्लिय=इळ.
मंकण=मांकड.	घयमिल्लीओ=घीमेल.
जूआ=यूका.	सावय=सावा.
पिपीलि=कीडी.	गोकीड=गींगोडा.
उद्देहिया=उद्देहिका, उधेइ.	जाईओ=जातिओ.
मक्कोडा=मंकोडा.	

गाथा १७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

गद्दहय=उस्तिगा, गद्धेया.	कुंथु=कुंथुआ.
चोरकीडा=विष्टाना कीडा.	गुवालिय=गोपालिक.
गोमयकीडा=छाणना कीडा.	इलिया=इलिका.
धन्नकीडा=धान्यना कीडा.	तेइंदिय=तेइंद्रिय.
य=वळी.	इंदगोवाई=इंद्रगोपादि.

अर्थः-(गोमी के०) कानखजूरीआ, एना पग

घणा होय छे, ने ए कानमां पेसी जइने माणसने घणी इजा करे छे, एम कहेवाय छे, (मंकण के०) माणसना सुवाना बिछानामां अथवा खाटला प्रमुखनी नवारमां जे जीवो उत्पन्न थाय छे तेने मांकड कहे छे, (जूआ के०) यूका. ए जीवो माणसना माथाना वालमां उत्पन्न थाय छे, अथवा माणसनां कपडांमां उत्पन्न थाय छे, एटले ए माणसना शरीरना मेलमांथी उत्पन्न थाय छे, एने कच्छी तथा गुजराती जाषामां लीख कहे छे, ते संस्कृत लिक्ष शब्दनो अपभ्रंश छे.(पिपीलि के०) एने पिपीलिका अथवा कीडी कहे छे, एनी राती अने काली एवी घणी जाति होय छे,ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (उद्देहिया के०) उद्देहिका,एने वाल्मिक जीव पण कहे छे. ए जीवो वृक्षमां, काष्ठमां अथवा गृहमां ज्यां ज्यां प्रवेश करे छे त्यां त्यां पोतानुं शरीर रहेवा पूरतुं घर बनावीने तेमांथी ते वृक्षादिकने खाती खाती चाली जाय छे. (य के०) वली (मक्कोडा के०) मत्कोटिका अथवा मंकोडा,ए जीव घणुं करीने बावलना झाडना थडमां उत्पन्न थाय छे,अथवा गोल प्रमुख मिष्ट पदार्थ ज्यां होय त्यां थाय छे. (इल्लिय के०) इल्लिका,ए जीव

भमरिया=भमरी.	मसगा=मछर.
तिड्डा=तीड.	कंसारी=कंसारी.
मच्छिय=माखी.	कविल=करोलीया.
डंसा=डांस.	मोलाई=खममांकमी.

अर्थः–(चउरिंदिया के०) चौरिंद्रिय जी आ छेः–(विछू के०) विंछु ए जातना फेरी जी थाय छे, तेना पूंछडामां एक कांटो होय छे, ते मारथी माणसने विष चडे छे, ते विंछी एवे न लोकमां प्रसिद्ध छे. (ढिंकुण के०) ए जीवो कां मक्षिकाने मलता होय छे, ते घोडाना तवेला प्र खने ठेकाणे उत्पन्न थाय छे, तेने लोकमां बग कहे छे. (भमरा के०) ए जीवो काला वर्णना ह छे, अने ते घणुं करीने ज्यां सुगंधी पुष्पोनां वृ होय छे त्यां रहे छे, ए जीवोने पुष्पोनो सुगंध घण प्रिय होय छे, ए भ्रमर एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे (भमरिया के०) भ्रमरिका, ए जीवो पीतादि घणा रंगवाला होय छे, तेमज विविध आकारवाल होय छे. (तिड्डा के०) ए जीवो वर्षाऋतुना अव सानमां जे वखते धान्यनां वृक्ष पाकी रहेलां होय

छे ते वखते आकाशमार्गे अगणित संख्याबंध ऊमतां कोइ धान्यनां क्षेत्र वगेरे उपर आवीने पडे छे, ते जेटली जग्यामां आवी पडे छे तेटली जग्यानां फारु पान वगेरे सर्व खाइने खाली करी नाखे छे, ते तीड एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे. (मछिय के०) मक्षिका, ए जीवो लोकमां अति प्रसिद्ध छे, ए माखी एवे नामे ओलखाय छे, उपलक्षणथी मधु-मक्षिका पण जाणी लेवी. (डंसा के०) डांस, ए जीवो सिंधु देशमां प्रसिद्ध छे. ए घणुं करीने वर्षा-काळमां चीकणी जमीनमां उत्पन्न थाय छे. (मसगा के०) मसक, ए जीवो लोकमां मछर एवे नामे ओलखाय छे, ए लोकमां प्रसिद्ध छे. (कंसारी के०) ए जीवो घणुं करीने ऊजड घर प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (कविल्ल के०) करोलीया अने (मोलाइ के०) खडमांकडी, आदि शब्द थकी पतंग प्रमुख बीजा जे चौरिंद्रिय जीवो होय ते सर्व जाणी लेवा. ए जीवने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय तथा नेत्रेंद्रिय ए चार इंद्रियो होय छे ॥ १७ ॥

हवे पंचेंद्रिय जीवोना भेद कहे छे:-

पंचिंदिया य चउहा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्तविहा, नायव्वा पुढविभेएणं ॥ १९ ॥

गाथा १९ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

पंचिंदिया=पंचेंद्रिय.
चउहा=चार प्रकारना.
नारय=नारकी.
तिरिया=तिर्यंच.
मणुस्स=मनुष्य.
देवा=देवता.
नेरइया=नारकीना जीव.
सत्तविहा=सात प्रकारना.
नायव्वा=जाणवा.
पुढविभेएणं=(रत्नप्रभादि पृथ्वीना भेदे करी

अर्थः-(पंचिंदिया के०) जेने स्पर्शनेंद्रिय,र ंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय तथा श्रोत्रेंद्रि पांच इंद्रियो होय ते पंचेंद्रिय जीव कहेवाय इहां "य" समुच्चयार्थमां छे. ते जीव (चउहा के चार प्रकारना छे. एक (नारय के०) नारकी, बी (तिरिया के०) तिर्यंच, त्रीजा (मणुस्स के मनुष्य, चोथा (देवा के०) देवता. तेउमां प्र (नेरइया के०) नारकीना जीव ते (पुढविभेएणं के रत्नप्रभादि पृथ्वीना भेदे करी (सत्तविहा के०

सात प्रकारना छे. ते सात पृथ्वीउंनां नाम कहे छेः–घमा, वंशा, सेला, अंजणा, रिठा, मघा तथा माघवती, ए सात ठेकाणे उत्पन्न थयेला जीवोने नारकी कहीए. तथा तेमनां गोत्रनां नाम कहे छे. रत्नप्रन्ना, शर्कराप्रन्ना, वालुकाप्रन्ना, पंकप्रन्ना, धूमप्रन्ना, तमःप्रन्ना तथा तमस्तमःप्रन्ना, ए सात प्रकारने पर्याप्ताना तथा अपर्याप्ताना नेदे गणतां चौद नेद नारकी जीवोना थाय छे ॥ १९ ॥

हवे पंचेंड्रिय तिर्यंचना नेद कहे छेः–

जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचेंदिया तिरिक्खा य ॥ सुसुमार मछ कछव, गाहा मगराइ जलचारी ॥ २० ॥

गाथा २० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

जलयर=जलचर.
थलयर=थलचर.
खयरा=खेचर.
तिविहा=त्रण प्रकारना.
पंचेंदिया=पंचेंड्रिय.
तिरिक्खा=तिर्यंच.
सुसुमार=सुसुमार.
मछ=माछलां.
कछव=काचवो.
गाहा=ऊंड.
मगराइ=मगर विगेरे.
जलचारी=जलचर जी

अर्थः—(तिरिक्खा पंचेंदिया तिविहा के०) तिर्यंच पंचेंद्रिय त्रण प्रकारना छे, ते आः—एक (जलयर के०) जलचर एटले जे जीवो पाणीमां उ॰ थाय, पाणीमां रहे तथा पाणीमांज नाश पामे ; जलचर जीव जाणवा. बीजा (थलयर के०) स्थलचर एटले जेजीवोनी उत्पत्ति, स्थिति तथा नाशनो संजव जलचरोनी पेठे पृथ्वी उपर होय ते, तथा त्रीजा (खयरा के०) खेचर एटले जे जीवोनी चालवानी स्थिति आकाशने विषे होय ते जाणवा. तेउमां प्रथम जलचर जीवना मुख्य पांच नेद ; ते आ प्रमाणेः—एक (सुसुमार के०) पाडाना जेवा मत्स्य होय छे, ते घणुं करी मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां दीठामां आवे छे, बीजो (मछ के० नाना प्रकारनां जे बीजां माछलां दीठामां आवे ; ते, ए जातिना जीवो घणुं करी खारा समुद्रमां विशेष दीठामां आवे छे, त्रीजो (कछव के०) का छप, ए जीवो घणुं करी मीठा पाणीना तलाव अथवा मोटेरा कूवाना पाणीमां दीठामां आवे छे, एनी त्वचा घणी कठिन होय छे अने तेमांथी ढाल ।

नामनां हथियार देहरक्षणार्थे लोक करे छे, ए जीवने लोकमां काचबाना नामे ओलखे छे, चोथो (गाहा के०) ए जीवो समुद्रमां तेमज मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां पण थाय छे. ए जीव तंतु आकारे होय छे, ने अति बलवान् होय छे, पाणीमां एनुं एटलुं जोर होय छे के ते हाथीने पण घसडी जाय छे, एने लोकमां झुंड एवे नामे ओलखे छे, पांचमो (मगर के०) मगर, ए जीव समुद्रमां होय छे, एनुं शरीर अति विशाल होय छे, ए लोकमां मगरमत्स्य एवे नामे ओलखाय छे, ए (आइ के०) आदि शब्दे करी बीजा पण (जलचारी के०) जलचर जीव घणा प्रकारना छे. ए जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच जीवना भेद कह्या ॥ २० ॥

हवे स्थलचर जीवोना भेद कहे छेः—

चउपय उरपरिसप्पा, भुयपरिसप्पा य
थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल-
पमुहा, बोधवा ते समासेणं ॥ २१ ॥

गाथा २१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

चउपय=चार पगवाळां. | उरपरिसप्पा=उरःपरिसर्प.

भुयपरिसप्पा=भुजपरिसर्प.	नउल=नोलिया.
थलयरा=स्थलचर. जीव.	पमुहा=प्रमुख.
तिविहा=त्रण प्रकारना.	बोधवा=जाणवा.
गो=गाय.	समासेणं=संक्षेपथी.
सप्प=सर्प.	

अर्थः–(थलयरा तिविहा के०) स्थलचर जीव त्रण प्रकारना छे, ते आः–एक (चउपय के०) चतु प्पद एटले चार पगवालां सर्व प्रकारनां पशुओ जाण लेवां, बीजा (उरपरिसप्पा के०) उरःपरिसर्प जीवो उदरथी चाले छे. एनी नाग प्रमुख घण जाति होय छे. एमां केटलाएक जीवो विषरहि होय छे, अने केटलाएक विष सहित होय छे. लोकमां प्रसिद्ध छे. (य के०) वली त्रीजा (भुय परिसप्पा के०) भुजपरिसर्प ए जीवो भुजा वडे चा छे. ते नोलिया प्रमुख जाणी लेवा. ए उपर कह्या त्रण प्रकारना स्थलचर जीवो तेओ अनुक्रमे (ग के०) गाय प्रमुख ते चतुष्पद, (सप्प के०) स प्रमुख ते उरःपरिसर्प तथा (नउलपमुहा के० नोलिया प्रमुख ते भुजपरिसर्प, ए (समासेणं के० संक्षेपमात्रे करी (बोधवा के०) जाणी लेवा. स्थलचर जीवोना भेद कह्या ॥ २१ ॥

हवे खेचर जीवोना भेद कहे छेः—

खयरा रोमयपक्खी, चम्मयपक्खी
य पायमा चेव ॥ नरलोगाउ बाहिं,
समुग्गपक्खी विययपक्खी ॥ २२ ॥

गाथा २२ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

खयरा=खेचर जीव.	चेव=निश्चे.
रोमय=रुंवाटांनी पांखवाळां.	नरलोगाउ=मनुष्यलोकनी.
पक्खी=पक्षी.	बाहिं=बहार.
चम्मय=चामडानी पांखवाळां.	समुग्ग=संकोचेली पांखवाळां.
पायमा=प्रगट.	वियय=विस्तारेली पांखवाळां.

अर्थः—(खयरा के०) खेचर जीवो ते आकाशने विषे विचरनारां जे पक्षीउ ते बे प्रकारनां छेः—एक (रोमयपक्खी के०) रोमज पक्षीउ, एटले जेउनी पांखो रोमसंयुक्त होय छे,जेवां के, शुक, हंस तथा सारसादिक पक्षीउ तेमज पारेवां, कागडा, चकलां, पोपट प्रमुख एनी पांख मोवाळानी होय छे, ते (य के०)बीजां (चम्मयपक्खी के०) चर्मज पक्षीनो (पायमा के०) प्रगट अर्थ छे. एटले जेउनी पांखो चामडाना जेवी होय छे तेने चर्मज पक्षी कहीए. जेवां के, चामाची-

मियां अथवा चर्मचीटिका, तथा वग्गुलि अथ
वल्गुली प्रमुख ए (चेव के०) निश्चे लोकमां प्रसि
छे, अने (नरलोगाउ वाहिं के०) मनुष्यलोक
बहार (समुग्गपक्खी के०) समुद्ग पक्षीउं, त
(वियपक्खी के०) वितत पक्षीउ होय छे. ते म
ष्यलोकनुं प्रमाण शास्त्रोमां आवी रीते कह्युं छे
जंबुद्वीप, धातकी खंम तथा पुष्करवर द्वीपना अ
जाग सुधी मनुष्योनी वस्ती छे एटले ए अ
द्वीपमां मनुष्यो छे. ते अढी द्वीपमांना प्रथम जं
द्वीपने चोफेर खाइनी पेठे लवण समुद्र वीं
रह्यो छे तथा बीजा धातकी खंमने कालोदधि वीं
रह्यो छे अने अढी द्वीपनी चोफेर स्वर्णमय मा
ष्योत्तर पर्वत किल्लानी पेठे वेष्टित थइ रहेलो
ए नरलोकदेशनुं प्रमाण एकंदर पीस्तालीश ला
योजननुं कह्युं छे. इहांज मनुष्योनां जन्म तथा म
रणनो संभव होवाथी ए मनुष्यलोक कहेवाय छे, ते
बहार उपर कहेलां बे जातिनां पक्षीउ होय छे, ते
समुद्गवत् समुद्ग पक्षीउनी पांख बेसती वखते संप
चन पामे छे, अने वितत पक्षीउनी पांख सर्वदा
ल्लीज होय छे. ए सर्व खेचर जीवो जाणवा॥२

हवे उपर त्रण प्रकारना जे तिर्यंच जीवो कह्या ते एकेकना वली बे बे भेद बीजी रीते कहे छेः—

सव्वे जल थल खयरा, समुछिमा गब्भ-
या डुहा हुंति ॥ कम्माकम्मग भूमि,
अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

गाथा २३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सव्वे=सर्व प्रकारना.	डुहा=बे प्रकारना.
जल=जलचर.	हुंति=छे.
थल=स्थलचर.	कम्माकम्मग भूमि=कर्मभूमि अने अकर्मभूमिना.
खयरा=खेचर.	अंतरदीवा=अंतरद्वीपना.
समुछिमा=संमूर्छिम.	मणुस्सा=मनुष्य.
गब्भया=गर्भज.	

अर्थः— ए उपर कहेला (सव्वे के०) सर्व प्रकारना (जल थल खयरा के०) जलचर, स्थलचर तथा खेचर जीवो ते एक (समुछिमा के०) संमूर्छिम अने बीजा (गब्भया के०) गर्भज ए (डुहा के०) द्विधा एटले बे प्रकारना (हुंति के०) छे. एम प्रत्येकना बब्बे प्रकार होवाथी छ भेद थया. तेमां जे जीवो माता पितानी अपेक्षा विना उत्पन्न थाय ते संमूर्छिम कहेवाय छे अने जे जीवो गर्भमां उत्पन्न

थाय ते गर्भज कहेवाय छे. तिहां एकेंद्रिय, बेइं
त्रींद्रिय तथा चतुरिंद्रिय ए सर्व जीव संमूर्छि
होय छे. ए तिर्यंचना सर्व मली अडतालीश भेद
छे ते आवी रीतेः—प्रथम एकेंद्रिय जीव बधा
कहेवाय छे. तेना बावीश भेद आगल चो.
गाथाना अर्थमां दर्शाव्या छे, अने बीजा
जीवना बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय अने पंचें
ए चार भेद मूल छे; तेमां बेइंद्रिय, तेइंद्रिय त
चौरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रियने पर्याप्ता तथा अपर्या
गणतां छ भेद थाय ते पूर्वोक्त बावीश साथे मेलव
अठ्यावीश भेद थया.

हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना वीश भेद छे ते देखाडे
जलचर, थलचर, खेचर, उरःपरिसर्प अने भुजपरि
सर्प, ए मूल पांच भेद संमूर्छिमना अने पांच गर्भ
जना मली दश भेद थाय. ते दश पर्याप्ता अने दश
अपर्याप्ता मली वीश भेद थया, तेने पूर्वोक्त अठ्या
वीश साथे मेलवतां अडतालीश भेद तिर्यंचना
थाय. ए रीते गाथाना पूर्वार्धमां पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं
वर्णन कर्युं. हवे गाथाना उत्तरार्धमां पंचेंद्रिय
मनुष्यना भेद कहे छेः—

(कम्माकम्मग भूमि के०) कर्मभूमिमां उत्पन्न
थयेला, अकर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला तथा (अंत-
[ीवा मणुस्सा य के०) अंतरद्वीपमां उत्पन्न थयेला
त्रण प्रकारना मनुष्य होय छे. तेमां कृषि वाणिज्या-
[क कर्मप्रधान भूमि ते कर्मभूमि कहीए. ते भूमिने
[पे जे मनुष्य उत्पन्न थाय छे ते कर्मभूमिज कहेवाय
. ते कर्मभूमिओ अढी द्वीपमां पंदर छे अने जेमां
[वि वाणिज्यादि कर्म नथी एवी अकर्मभूमिओ
[ीश छे, तथा अंतरद्वीप छप्पन छे ते आ प्रमाणेः—
जंबुद्वीपना मध्यभागे मेरु पर्वत छे. ते मेरुथी दक्षिण
[द]शे लवण समुद्रने लगतुं लवण समुद्रनी उत्तर दिशे
[भ]रत क्षेत्र छे ते कर्मभूमिज छे तथा ते भरत क्षेत्रने
[उ]त्तर दिशिने छेडे हेमवंत पर्वत छे, ते पर्वत मूकी
[ते]नी उत्तर दिशिमां हिमवंत नामे युगलियानुं क्षेत्र
, अने वली मेरुथी उत्तर दिशे लवण समुद्रने लगतुं
[स]मुद्रनी दक्षिण दिशे ऐरवत क्षेत्र छे ते कर्मभूमिज
. ते ऐरवतनी दक्षिण दिशिने छेडे शिखरी नामे
[प]र्वत छे, ते पर्वत मूकीने तेनी दक्षिण दिशे एक
[हि]रण्यवंत नामे युगलियानुं क्षेत्र छे एटले पूर्वे
[क]हेलां एक हिमवंत अने बीजुं हिरण्यवंत ए बे—

अकर्मभूमि क्षेत्र छे; एने विषे युगलिया मनुष्य रहे
तेनुं सदाकाले एक गाउ देहमान अने एक पल्य
पमनुं आयु छे. त्यां सदाकाल त्रीजो आरो वर्त्ते छे.

तथा वली ते पूर्वोक्त हिमवंत नामे युग
याना क्षेत्रथी उत्तर दिशे एक महाहिम
पर्वत छे, ते पर्वतनी उत्तर दिशे हरिवर्ष ना
युगलियानुं क्षेत्र छे तथा पूर्वोक्त हिरण्य
नामे युगलियाना क्षेत्रथी दक्षिण दिशे एक रु
नामे पर्वत छे, ते पर्वतनी दक्षिण दिशे एक रम्य
नामे युगलियानुं क्षेत्र छे. ए रीते एक हरिवर्ष ता
बीजुं रम्यक ए बे अकर्मभूमि क्षेत्रमां युगलिया व
छे, तेनुं सदाकाले बे गाउ देहमान अने बे पल्यो
पमनुं आयु छे. त्यां सदाकाल बीजो आरो वर्त्ते छे

तथा वली हरिवर्ष नामे युगलियाना क्षेत्रथ
उत्तर दिशे मेरुनी तरफ लाल हिंगला जेवा वर्ण
निषध नामे पर्वत छे, तेनी पासे एक देवकु
नामे युगलियानुं क्षेत्र छे तथा वली मेरु थकी
उत्तर दिशे जे रम्यक नामे युगलियानुं क्षेत्र
तेनाथी दक्षिण दिशे नील वर्णे एक नीलवं
नामे पर्वत छे, ते पर्वत थकी दक्षिण दिशे मेरुनी

ासे एक उत्तरकुरु नामे युगलियानुं क्षेत्र छे. एटले
क देवकुरु अने बीजुं उत्तरकुरु ए बे अकर्मभूमि
त्र, तेने विषे युगलिया मनुष्य रहे छे. तेनुं सदा
ाल त्रण गाउनुं देहमान छे अने त्रण पल्योपमनुं
ायु छे. तिहां सदाकाल पहेलो आरो वर्ते छे.

तथा निषध अने नीलवंत ए बे पर्वतो कह्या तेनी
चाले मेरु पर्वत छे, ते मेरुनी चारे दिशि मांहेथी
वे दिशे पूर्व महाविदेहनी सोल विजय छे अने
श्चिम दिशे पश्चिम महाविदेहनी सोल विजय छे.
; बेहु मली बत्रीश विजयनुं एक महाविदेह नामे
र्मभूमि क्षेत्र छे.

ए रीते प्रथम जंबुद्वीपने विषे एक हेमवंत अने
हैरण्यवंत, बीजुं हरिवर्ष ने रम्यक, त्रीजुं देवकुरु ने
त्तरकुरु, ए त्रण जोडले मली छ क्षेत्र युगलिया
ानुष्यनां छे ते अकर्मभूमिज कहीए, कारण के ए
त्रमां जे मनुष्य रहे छे तेने प्रायः कर्म थोडां
ागे छे, केमके असि, मसि ने कृषि ए त्रण वस्तु
र्मबंधनुं कारण छे ते वस्तु ए क्षेत्रोमां नथी, अने
क भरत, एक ऐरवत तथा एक महाविदेह मली
त्रण क्षेत्र कर्मभूमिज छे.

ए रीते बीजो धातकीखंड द्वीप अने पुष्कर रनो अर्ध ए दोढ द्वीपमां प्रत्येके प्रत्येके एक दिशिए अने बीजो पश्चिम दिशिए मली बे बे पर्वत छे, अने ज्यां एक मेरु होय त्यां एक जरत, ऐरवत तथा एक महाविदेह, ए त्रण कर्मभू क्षेत्र होय अने पूर्वोक्त जंबुद्वीपनी पेठे छ युग यानां क्षेत्र होय ते वारे बे जरत, बे ऐरवत, बे मह विदेह, ए छ क्षेत्र कर्मजूमिनां अने बे हेमवंत, हिरण्यवंत, बे हरिवर्ष, बे रम्यक, बे देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए सर्व मली बार युगलियानां क्षेत्र धातकी नामे बीजा द्वीपमां छे अने तेटलांज वली पुष्करार्ध नामे त्रीजा अर्धा द्वीपमां पण छे, केमके ए बेउ द्वीपमां प्रत्येके बे बे मेरु छे.

ए रीते ए अढी द्वीपनां क्षेत्रने एकठां करीए ते वारे त्रीश क्षेत्र अकर्मजूमिनां अने पंदर क्षेत्र कर्मभू मिनां थाय, सरवाले पीस्तालीश क्षेत्र मनुष्यनां थयां. हवे वली छप्पन नेद बीजा देखाडे छे. जंबुद्वीप ला जरत क्षेत्रना उत्तरने छेडे हेमवंत नामे छे, ते पूर्व दिशे अने पश्चिम दिशे लवण समुद्र पर्यंत लांबो छे. ते पर्वतनी पूर्व श्चिम

देशे लवण समुद्र मध्ये बे बे दाढाउं नीकली छे
। वारे बे दिशिनी चार दाढाउं थइ, तेवीज रीते
ऐरवत क्षेत्रने दक्षिणने छेडे शिखरी नामे पर्वत
।, ते पण पूर्व पश्चिम हेमवंतनी परे लांबो छे. तेमांथी
पण हेमवंतनी रीते बे दिशिए मली चार दाढाउं
समुद्रमां नीकली छे. ए बे पर्वतनी आठ दाढाउं
मांहेली एकेकी दाढाने विषे सात सात अंतरद्वीप
।, ते वारे आठ दाढाउंने विषे छप्पन अंतरद्वीप थया
तेने विषे पण युगलिया रहे छे, तेने अंतरद्वीपनां
मनुष्य कहीए. ते मनुष्य एकांतरे आहार लीए छे,
तथा तेमनां शरीरनी उंचाइ आठसो धनुष्यनी, अने
पल्योपमना असंख्यातमा जाग जेटलुं तेमनुं आयु छे.
ए प्रमाणे मनुष्यना पीस्तालीश नेद पूर्वे कह्या तेनी
साथे ए अंतरद्वीपना छप्पन नेद मेलवतां १०१ नेद
थाय, तेने पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे प्रकारे गुणीए
। वारे २०२ नेद थाय तथा वली एहीज गर्नज मनु-
ष्यनां मल, मूत्र, श्लेष्म प्रमुख चौद स्थानकने
विषे जे उपजे तेने संमूर्छिम मनुष्य कहीए. ते संमू-
र्छिम मनुष्य सर्व अधुरी पर्याप्तिएज मरण पामे छे,
माटे ए अपर्याप्ताज होय, तेथी एना १०१ नेद पूर्वोक्त

२०२ नी साथे मेळवतां ३०३ भेद थाय छे ॥ २३

हवे चार निकायना देवोना भेद कहे छे:-

दसहा भवणाहिवई, अठविहा वाण-
मंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा,
दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥

गाथा २४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दस प्रकारना.	जोइसिया=ज्योतिषी.
भवणाहिवई=भवनाधिपति, (भवनपति).	पंचविहा=पांच प्रकारना.
	दुविहा=बे प्रकारना.
अठविहा=आठ प्रकारना.	वेमाणिया=वैमानिक.
वाणमंतरा=वाणव्यंतर देवो.	देवा=देवो.

;, तेमां तेर पाथडा छे, ते तेर पाथडाना वार
:आंतरा छे, तेमांथी पहेलो अने छेल्लो आंतरो
मूकीने वाकीना दश आंतरा वचाले रह्या, ते मांहे
एकेके आंतरे एकेका जवनपति देवोनी निकाय छे,
ते दशे निकायमां प्रत्येके एक दक्षिणे अने एक उत्तरे
मली वे वे इंद्र छे, ते वारे दश निकायना वीश इंद्र
छे. ए प्रथम जवनपति देवोने रहेवानुं स्थानक कह्युं.

हवे ए वीजा व्यंतर निकायना देवो कहे छे. (अठविहा वाणवंतरा हुंति के०) आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो छे, तेमां व्यंतर देवोना आठ जेद छे, ते आः—पिशाच, जूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग अने गंधर्व, तथा वीजा अणपन्नी, पणपन्नी, ऋषिवादी, जूतवादी, कंदित, महाकंदित, कोहंम अने पतंग, ए आठ जेद जे छे ते वाणव्यंतर देवोना जाणवा.

मेरु पर्वतना मूलमां सरखी पृथिवी छे. त्यांथी मांमी नीचे जइए ते वारे (१८००००) योजन रत्नप्रजा पृथिवीना तलीया लगण थाय, तेमांथी एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचे मूकीए, वाकी (१७८०००)योजनमां पूर्वोक्त तेर पाथडा छे, तेमां

२०२ नी सार्थे मेलवतां ३०३ नेद थाय ठे ॥ २३

हवे चार निकायना देवोना नेद कहे ठेः-

दसहा नवणाहिवई, अठविहा वाण- वंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा, डुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥

गाथा २४ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दश प्रकारना.	जोइसिया=ज्योतिषी.
नवणाहिवई=नवनाधिपति, (नवनपति).	पंचविहा=पांच प्रकारना.
अठविहा=आठ प्रकारना.	डुविहा=बे प्रकारना.
वाणवंतरा=वाणव्यंतर देवो.	वेमाणिया=वैमानिक.
हुंति=ठे.	देवा=देवो.

अर्थः– नवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क तथा निक, ए चार प्रकारना जे देव ठे तेउमांना (द… नवणाहिवई के०) नवनाधिपति देवोना दश ठे, ते आः–असुरकुमार, नागकुमार, सुव… विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकु दिशिकुमार, वायुकुमार तथा स्तनितकुमार, ए नेद कह्या. हवे एनुं रहेवानुं स्थान कहे ठेः नामे प्रथम नरकनुं दल जाफपणे १८०००० यो…

तेमां तेर पाथमा ठे, ते तेर पाथमाना वार आंतरा ठे, तेमांथी पहेलो अने ठेल्लो आंतरो मूकीने बाकीना दश आंतरा वचाळे रह्या, ते मांहे एकेके आंतरे एकेका जवनपति देवोनी निकाय ठे, ते दशे निकायमां प्रत्येके एक दक्षिणे अने एक उत्तरे मळी बे बे इंद्र ठे, ते वारे दश निकायना वीश इंद्र ठे. ए प्रथम जवनपति देवोने रहेवानुं स्थानक कह्युं.

हवे ए बीजा व्यंतर निकायना देवो कहे ठे. (अठविहा वाणवंतरा हुंति के०) आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो ठे, तेमां व्यंतर देवोना आठ जेद ठे, ते आः–पिशाच, जूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग अने गंधर्व, तथा बीजा अणपन्नी, पणपन्नी, इसिवादी, जूतवादी, कंदित, महाकंदित, कोहंम अने पतंग, ए आठ जेद जे ठे ते वाण-व्यंतर देवोना जाणवा.

मेरु पर्वतना मूळमां सरखी पृथिवी ठे. त्यांथी मांमी नीचे जइए ते वारे (१८००००) योजन रत्नप्रजा पृथिवीना तळीया लगण थाय, तेमांथी एक हजार योजन उपर अने एक हजार योजन नीचे मूकीए, बाकी (१७८०००)योजनमां पूर्वोक्त तेर पाथमा ठे, तेमां

दश जवनपतिना देवो रहे ठे, अने ... :१८०।५०६।
योजन मूक्या ठे तेमांथी वली सो योजन हेठल
सो योजन उपर मूकी वाकी आठसो योजन
तेमां आठ व्यंतरनी निकाय ठे. ए आठ
पण दक्षिण अने उत्तर दिशि मली एकेकी
बे बे इंद्र ठे, ते वारे सोल इंद्र व्यंतर देवोना ...
वली उपरला जे एकसो योजन मूक्या ठे तेमांथी
दश योजन उपर तथा दश योजन नीचे मू
वाकी एंशी योजन रहे तेमां आठ प्रकारना वा
व्यंतर देवो रहे ठे. एमां पण पूर्वोक्त रीते एके
निकायने विषे बे बे इंद्र गणतां सोल इंद्र वाण
तर देवोना ठे. सर्व मली बे प्रकारना व्यंतर देवोन
बत्रीश इंद्र ठे. तेनी साथे पूर्वोक्त जवनपति देवोन
वीश इंद्र मेलवीए ते वारे बावन इंद्र थाय.

हवे त्रीजा ज्योतिषी देवोनी निकायना दे
कहे ठे. (ओडुमिया पंचविहा के०) ज्योतिष
देवोना पांच भेद ठे, ते आः—चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्ष
तथा तारा. ते फरी बे प्रकारना ठेः— एक चर
बीजा स्थिर. तेमां जे मनुष्यक्षेत्रने विषे ज्योति
ठे ते चर एटले अस्थिर गत्याकाश फरता रहे

ने जे मनुष्यक्षेत्रथी बहार छे ते स्थिर छे, केमके मनां विमान फरतां नथी. जे ज्यां छे ते त्यां स्थिर यां छे. एना पांच भेदमांथी एक चंद्रमा अने जो सूर्य, ए बेने इंद्रपदवी छे; बीजाने इंद्र- दवी नथी. मेरुने मूले संभूतला पृथ्वी थकी सातसें नेवुं योजन ऊंचा जइए तिहां तारानां विमान , तिहांथी दश योजने सूर्यनुं विमान छे, तिहांथी शी योजने चंद्रमानुं विमान छे, तिहांथी चार योजन ऊंचा नक्षत्रनां विमान छे, तेथी ऊंचा सोल योजनमां वली जूदा जूदा ग्रहनां विमान छे. ए रीते सर्व मली सातसें नेवुं योजनथी उपरे एकसो दश योजनमां ज्योतिषी देव रहे छे.

हवे चोथा वैमानिक देवोनी निकायना देवो कहे छे. (दुविहा वेमाणिया देवा के०) वैमानिक देवोना बे भेद छे, ते कहे छे. एक तो जे श्रीती- र्थंकरादिकना पांच कल्प एटले आचार जाणवा, माटे एने कल्पोपपन्न देवो कहीए. ते देवता सौधर्म, ईशानादि बार देवलोकना भेदे करी बार प्रकारे छे. ते बार देवलोकमां वली आठ देवलोक पर्यंत तो प्रत्येके एकेको इंद्र छे, अने नवमा तथा दशमा

ए वे देवलोके एक इंद्र छे, अने अगीयारमा ·
बारमा ए वे देवलोके पण एक इंद्र छे. ए री
बार देवलोकना मली दश इंद्र छे, अने पूर्वे जव
पतिना वीश तथा व्यंतरना बत्रीश अने ज्योतिषी
बे मली चोपन इंद्र कह्या तेनी साथे ए दश इं
मेलवीए ते वारे सर्व मली चोसठ इंद्र थाय.
सर्व कल्पोपपन्न देवता कहेवाय.

हवे बीजा जे कल्प एटले आव्या गयानो आचा
तेणे करी रहित छे तेने कल्पातीत देवो कही
तेना वली बे भेद छे. एक तो नव ग्रैवेयकना दे
अने बीजा पांच अनुत्तर विमानना देवो जाणवा.

हवे ए कल्पोपपन्न तथा कल्पातीत देवोन
स्थानक कहे छे. चौद राजलोक छे तेमां सात रा
नीचे साते नारकीए करी पूर्यो छे अने सात रा
ऊंचो छे. ए चौद राजलोक पुरुषने आकारे छे, तेम
मांजिने स्थानके मनुष्यलोक छे अने मेरुने मूले संचू
तला पृथिवी छे,त्यांथी सातसें नेवुं योजनथी मांडीने
नवसें योजन पर्यंत ऊंचा ज्योतिषी देवो रहे छे, तेवार
पछी एक राजने आशरे ऊंचा जइए तिहां दक्षिण
दिशे सौधर्म देवलोक अने उत्तर दिशे ईशान देवलोक

ए रीते बे देवलोक जोमाजोडे छे. तेवारे वली त्रीजो सनत्कुमार दक्षिण दिशिए अने चोथो माहेंद्र उत्तर दिशे,ए रीते बे देवलोक जोमाजोडे छे. तेवार पछी वली पांचमो ब्रह्म देवलोक, छठो लांतक, सातमो शुक्र, आठमो सहस्त्रार, ए चार देवलोक अनुक्रमे एक एकनी उपर केटले केटले आंतरे एकला एक-लाज छे. तेवार पछी वली केटलाएक ऊंचा जइए त्यां नवमो आनत अने दशमो प्राणत ए बे देव-लोक दक्षिण अने उत्तरे जोमाजोडे छे. तेवार पछी वली पण केटलाएक ऊंचा जइए तेवारे अगीया-रमो आरण अने बारमो अच्युत ए बे देवलोक दक्षिण अने उत्तर दिशे जोमाजोडे छे. तेवार पछी वली केटलाएक ऊंचा जइए तेवारे चौद राजलोक-रूप पुरुषना गलाने स्थानके नव ग्रैवेयक छे. तेवार पछी वली केटलेक ऊंचे पांच अनुत्तर विमान छे. तेवार पछी चौद राजलोकरूप पुरुषना ललाटने ठेकाणे सिद्धशिला छे, ते स्फटिक रत्ननी परे निर्मल छे, तिहां सिद्धना जीवो रह्या छे. एम ए देवताने रहेवानां स्थानक कह्यां. हवे इहां वली त्रण प्रकारना किल्बिषिया देवो तथा नव प्रकारना

लोकांतिक देवो छे तेने रहेवानां स्थानक
बतावे छे. त्यां प्रथम किल्बिषिया देवोनां स्था..
कहे छे. एक तो पहेला अने बीजा देवलोकने
नीचे त्रण पल्योपमना आयुवाळा रह्या छे अने
बीजा वली त्रीजा तथा चोथा देवलोकनी नीचे
त्रण सागरोपमना आयुवाळा रह्या छे, तथा त्रीजा
वली पांचमा देवलोकनी नीचे तेर सागरोपमना
आयुवाला रह्या छे. ए त्रण प्रकारना किल्बिषिया
देवो चंमालप्रायः जाणवा तथा वली पांचमा देव
लोकने छेडे उत्तर अने पूर्वनी अन्यंतर कृष्णरा
जीमां नव प्रकारना लोकांतिक देवो रहे छे, एने
आठ सागरोपमनुं आयु छे.

ए सर्व देवोना वधा मली एकसो ने अठाणुं भेद
शास्त्रोमां कह्या छे, ते आ प्रमाणेः—जवनपतिना
दश जेद, चर ज्योतिषीना पांच जेद, स्थिर ज्योति
षीना पांच जेद, वैताढ्यने विषे रहेनारा तिर्यग्जृं
नक देवोना दश जेद, नारकी जीवोने दुःख आप
नारा परमाधामीना पंदर जेद, व्यंतरना आठ जेद
वाणव्यंतरना आठ जेद, किल्बिषियाना त्रण जेद
लोकांतिकना नव जेद, बार देवलोकना बार जेद

नव ग्रैवेयकना नव न्नेद, पांच अनुत्तर विमानोना पांच न्नेद, ए सर्वे मली नवाणुं न्नेद थया. एने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे न्नेदे गुणतां एकसो ने अठाणुं न्नेद थाय ठे ॥ २४ ॥

ए रीते पूर्वोक्त तिर्यंचना अमतालीश, नारकीना चौद, मनुष्यना त्रणसें ने त्रण तथा देवताना एकसो ने अठाणुं मली जीवोना ५६३ न्नेदो थया. एम चौद राजलोकमां जीवादिक ठ द्रव्य ठे, तेमां एक जीव द्रव्यना एक संसारी अने बीजा सिद्ध ए बे न्नेद पूर्वे कह्या हता, तेमांथी संसारी जीवोना पांचसें त्रेसठ न्नेद संक्षेपे कही देखाड्या, ए संसारी जीवोनो विचार कह्यो.

हवे बीजा सिद्ध जीवोना न्नेद कहे ठेः–

सिद्धा पनरस न्नेया, तिठ अतिठाइ सिद्धन्नेएणं ॥ एए संखेवेणं, जीववि-गप्पा समरकाया ॥ २५ ॥

गाथा २५ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

सिद्धा=सिद्ध.	न्नेया=न्नेदो.
पनरस=पंदर.	तिठ=तीर्थंकर.

अतित्थाइ=अतीर्थकरादि.
सिद्धजेएणं=सिद्धना नेदे करी.
एए=ए.
संखेवेणं=संक्षेपथी.
जीवविगप्पा=जीवना विक
(नेदं
समरकाया=कह्या.

अर्थः–(सिद्धा के०) सिद्ध ते सर्व कर्म मुक्त थयेला जीवो, तेना (तिथ्र अतित्थाइ के० तीर्थंकर तथा अतीर्थंकरादि (सिद्धजेएणं के० सिद्धना नेदे करी (पनरस नेया के०) पंदर थाय ठे. ते पंदर नेदनां नाम नव तत्त्वना बाल बोध थकी जाणवां. (एए संखेवेणं के०) ए पूर्वो सर्व संक्षेपे करीने (जीवविगप्पा के०) जीव विकल्प एटले नेद ते (समरकाया के०) प्रकारे कह्या ठे ॥ २५ ॥

हवे जे आगल कहेवा योग्य ठे ते मूल ग्रंथकर्त्ता पोतेज गाथा वडे कहे ठे.

एएसिं जीवाणं, सरीरमाऊ ठिई सका-
यंमि ॥ पाणा जोणिपमाणं, जेसिं जं
अत्थि तं जणिमो ॥ २६ ॥

गाथा २६ मीना दूटा शब्दना अर्थ.

एएसिं जीवाणं=ए जीवोनुं.
सरीरं=शरीर.
आऊ=आयुष्य.
ठिई=स्थिति.
सकायंमि=पोतानी कायने विषे.
पाणा=प्राण.
जोणि=योनि.
पमाणं=प्रमाण.
जेसिं=जेमनुं.
जं=जेटलुं.
अत्थि=छे.
तं जणिमो=तेटलुं कहीशुं.

अर्थः—(एएसिं के०) ए पूर्वोक्त एकेंद्रियादिक (जीवाणं के०) जीवोना एक (सरीरं के०) शरीरनुं प्रमाण, बीजुं (आऊ के०) जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी आयुष्यनुं प्रमाण, त्रीजुं (ठिई सकायंमि के०) एकेंद्रियादिक जीवो मरण पामीने फरी त्यांज उत्पन्न थाय एवी जे स्वकायस्थिति तेनुं प्रमाण, चोथुं (पाणा के०) इंद्रियादिक दश प्राणोनुं प्रमाण, पांचमुं (जोणिपमाणं के०) चोराशी लक्ष योनि मांहेली कया कया जीवोमां केटली केटली योनिओ होय तेनुं प्रमाण, ते (जेसिं जं अत्थि के०) जे जे जीवोनुं जेटलुं छे (तं जणिमो के०) ते जीवोनुं तेटलुं अमे कहीशुं ॥ २६ ॥

त्यां प्रथम शरीरना प्रमाणनो प्रकार कहे छेः-

अंगुल असंख भागो, सरीरमेगिं-
दियाण सवेसिं ॥ जोयण सहस्स-
महियं, नवरं पत्तेय रुक्खाणं ॥ २७ ॥

गाथा २७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

अंगुल=अंगुलना.	सहस्सं=हजार.
असंख=असंख्यातमा.	अहियं=अधिक.
भागो=भाग जेटलुं.	नवरं=विशेष.
सवेसिं एगिंदियाण=सर्वे एकेंद्रिय जीवोनां.	पत्तेय रुक्खाणं=प्रत्येक वनस्पति
जोयण=योजन.	

अर्थः– (सवेसिं एगिंदियाण सरीरं के०) स
सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय प्रमुख एकेंद्रिय जीवो
शरीरोनुं प्रमाण (अंगुल असंख भागो के०) अंगुल
असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे, (नवरं के०
पण एटली विशेषता छे जे (पत्तेय रुक्खाणं के०) प्रत्ये
वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण (जोयण सहस्समहि
के०) एक हजार योजनथी कांइक अधिक हो
छे. ते समुद्रादिकने विषे उत्सेधांगुल प्रमाण हज
योजनना ऊंडा पाणीमां पद्मनाल होय छे तथा

अढी द्वीपथी बहार एवी खलाउं पण होय छे. अहीं यद्यपि सामान्यपणे पृथ्वीकायादिक एकेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण अंगुलनो असंख्यातमो भाग मात्र कह्युं छे, तथापि संग्रहिणयादिकने विषे विशेषे करी जाणवामां आवे छे के अंगुलना असंख्यातमा भागना पण असंख्य भेद छे. एवी रीते ते एकेंद्रियना शरीरनुं प्रमाण कह्युं.

हवे द्वींद्रियादिक विकलेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण कहे छेः—

बारस जोयण तिन्नि,—च गाउआ जोयणं च अणुकमसो ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देहमुच्चत्तं ॥ २७ ॥

गाथा २७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

बारस=बार.	जोयणं=एक योजन.
जोयण=योजन.	अणुकमसो=अनुक्रमे.
तिन्नेव=त्रण.	देहं=शरीर.
गाउआ=गाउ.	उच्चत्तं=उंचपणुं.

स्वयंभूरमणनी बहार रहेला (बेइंद्रिय के०)
. जीवनां शरीरनी उंचाइ (बारस

त्यां प्रथम शरीरना प्रमाणनो प्रकार कहे छे:—

अंगुल असंख भागो, सरीरमेगिं-
दियाण सवेसिं ॥ जोयण सहस्स-
महियं, नवरं पत्तेय रुक्खाणं ॥ ३७ ॥

गाथा ३७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

अंगुल=अंगुलना.
असंख=असंख्यातमा.
भागो=भाग जेटलुं.
सवेसिं एगिंदियाण=सर्वे एकेंद्रिय जीवोनां.
जोयण=योजन.
सहस्सं=हजार.
अहियं=अधिक.
नवरं=विशेष.
पत्तेय रुक्खाणं=प्रत्येक वनस्पतिना.

अर्थः— (सवेसिं एगिंदियाण सरीरं के०) सर्वे सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय प्रमुख एकेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण (अंगुल असंख भागो के०) अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे, (नवरं के०) पण एटली विशेषता छे जे (पत्तेय रुक्खाणं के०) प्रत्येक वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण (जोयण सहस्समहियं के०) एक हजार योजनथी कांइक अधिक होय छे. ते समुद्रादिकने विषे उत्सेधांगुल प्रमाण हजार योजनना ऊंचा पाणीमां पद्मनाल होय छे तथा आ

शंखादिक

जोयण के०)बार योजननी होय छे, अढी द्वीपनी बहा रहेला (तेइंदिय के०) कर्णशृंगालादिक तेइंद्रिय जी वोनां शरीरनी उंचाइ (तिन्नेव गाउआ के०) त्र गाउनी होय छे, (च के०) तथा अढी द्वीपनी बहा रहेला (चउरिंदिय के०) भ्रमरादिक चौरिंद्रि जीवोनां (देहमुच्चत्तं के०) शरीरनुं उंचपणुं (जोय के०) एक योजननुं होय छे. (अणुकमसो के० गाथाना पदना अनुक्रमे एटले बेइंद्रियने बार योज वगेरे कहेवा ॥ २० ॥ ए विकलेंद्रिय जीवोनां शरी रनुं प्रमाण कह्युं.

हवे नारकी आदिक पंचेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण कहेतो थको प्रथम नारकी जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कहे छे.

धणुसयपंच पमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रय- णप्पहा जाव ॥ २१ ॥

गाथा २१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

धणु=धनुष्य.	पमाणा=प्रमाण.
सयपंच=पांचसें.	नेरइया=नारकीओ.

इ=सातमी आदि.	नेया=जाणवुं.
र=पृथ्वीने विषे.	रयणप्पहा=रत्नप्रभा.
तेथी.	जाव=ज्यांसुधी.
्ण=अर्धा अर्धा उंचा.	

ार्थः–(सत्तमाइ पुढवीए के०) तमस्तमःप्रभा
ी सातमी आदि नरकपृथ्वीमां रहेनारा
इया के०) नारकीउंनां शरीरोनुं प्रमाण आवी
ेः–(धणुसयपंच पमाणा के०) सातमी
ीना नारकीउंनां शरीरोनुं प्रमाण पांचसें धनुष्य
ी उंचाइनुं छे. एम अनुक्रमे (तत्तो अद्धूणा
) तेथी अर्ध अर्ध संख्या जाणी करवी,
र अढीसें धनुष्य जेटला प्रमाणनुं शरीर छठी
ीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे. सवासो
्य उंचाइनुं प्रमाण पांचमी पृथ्वीना नारकी-
शरीरोनुं होय छे. साडा बासठ धनुष्य उंचा-
प्रमाण चोथी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं
छे. सवा एकत्रीश धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण
ी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय छे. साडा
धनुष्य अने बार अंगुल उंचाइनुं प्रमाण
ी पृथ्वीना नारकीउंनां शरीरोनुं होय

हुंति=छे. | पक्खिसु=पक्षीनुं.
धणुअ=धनुष्य. | भुयचारी=भुजपरिसर्प.
पुहुत्तं=पृथक्त्व,बेथी नव सुधी. | गाउअ=गाउ.

गाथा ३१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

खयरा=खेचर. | समुछिमा=संमूर्छिम.
भुयगा=भुजपरिसर्प. | चउप्पया=चार पगवाळा.
मिता=प्रमाणवाळा. | भणिया=कह्या छे.

गाथा ३२ मी पूर्वार्धना छूटा शब्दना अर्थ.

छच्चेव=निश्चे छ. | गब्भया=गर्भज.
गाउआइं=गाउ. | मुणेयवा=जाणवा.

अर्थः—तिर्यंच जीवो गर्भज अने संमूर्छिम ए बे प्रकारना होय छे,तेमां गर्भजना शरीरनुं प्रमाण आवी रीतेः—(मछा उरगा य सहस्स जोयण माणा के०) मत्स्य अने उरःपरिसर्पनां शरीरनुं प्रमाण एक हजार योजननुं होय छे. एवां मोटां मत्स्यो स्वयंभूरमण समुद्रमां होय छे. अने एवा उरःपरिसर्पो अढी द्वीपथी बहार होय छे. (पक्खिसु धणुअ पुहुत्तं के०) पक्षीओनां शरीरनुं प्रमाण धनुष्य पृथक्त्व एटले बे धनुष्यथी सहने नव धनुष्य

सुधी होय छे, अने (भुयचारी गाउअ पुहुत्तं के०)
गोधादिक भुजपरिसर्पना शरीरनुं प्रमाण गव्यूति
पृथक्त्व एटले बे गाउथी मांडी नव गाउ सुधी होय.
ए यथा जीवो (गब्भया हुंति के०) गर्भज छे ॥ ३० ॥
हवे संमूर्छिमनां शरीरनुं प्रमाण आवी रीते:-
(खयरा भुयगा धणुअ पुहुत्तं के०) खेचर एटले
पक्षीओ अने भुजग एटले भुजपरिसर्पनां शरीरनुं
प्रमाण धनुष्य पृथक्त्व एटले बे धनुष्यथी मांडीने नव
धनुष्य सुधी होय छे, तथा (उरगा य जोयण पुहुत्तं
के०) उरग एटले उरःपरिसर्पनां शरीरनुं प्रमाण
योजन पृथक्त्व एटले बे योजनथी मांडीने नव
योजन सुधी होय छे, अने (चउप्पया गाउ
पुहुत्त मित्ता के०) चतुष्पद एटले चार पगवाळा
जीवोनां शरीरनुं प्रमाण गाउ पृथक्त्व एटले
गाउथी मांडीने नव गाउ सुधी होय छे, ए
रीते (समुच्छिमा तणिया के०) संमूर्छिम तिर्यंच
जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कह्युं छे. केटलांएक पु
कोमां "भुयगा उरगा य जोयण पुहुत्तं" ए
पाठ छे, ए प्रमाणे अर्थ करतां भुजपरिसर्पनां
रनुं प्रमाण योजन पृथक्त्व थाय छे ते ...

ण्थी, जेमके प्रज्ञापना तथा संग्रहिणआदि सूत्रोथी विरुद्ध छे ॥ ३१ ॥ अने (चउप्पया गब्भया उच्चेव गाउआइं के०) गर्भज चतुष्पद् जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण उत्कृष्टथी छ गाउनुंज (मुणेयव्वा के०) मनाय छे. एवां मोटां शरीरना हस्तीउ देवकुर्वादिक युगलियानां क्षेत्रोमां होय छे.

हवे पंचेंद्रिय मनुष्यनां शरीरनुं प्रमाण गाथाना उत्तरार्ध वडे कहे छेः—

कोस तिगं च मणुस्सा, उक्कोस सरीर माणेणं ॥ ३२ ॥

गाथा ३२ मी उत्तरार्धना छूटा शब्दना अर्थ.

कोस=गाउ. | उक्कोस=उत्कृष्ट.
तिगं=त्रण. | माणेणं=प्रमाण.
मणुस्सा=मनुष्य.

अर्थः—(मणुस्सा उक्कोस सरीर माणेणं के०) उत्कृष्टथी मनुष्यनां शरीरनुं प्रमाण (कोस तिगं के०) त्रण कोशनुं होय छे. ते देवकुर्वादिक क्षेत्रोना युगलिया जाणवा ॥ ३२ ॥ ए मनुष्यनां देहमान कह्यां.

हवे देवोनां स्वाभाविक शरीरोनुं प्रमाण कहे छे:-

ईसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त हुंति उच्चत्तं ॥ डुग डुग डुग चउ गेवि,- जणुत्तरे इक्किक परिहाणी ॥ ३३ ॥

गाथा ३३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

ईसाणंत=(बीजा) ईशान देवलोकना अंत सुधीना.	उच्चत्तं=उंचाइ.
सुराणं=देवताउनां.	डुग=बे.
रयणीउ=हाथ.	चउ=चार.
सत्त=सात.	गेविज्ञ=(नव) ग्रैवेयक.
हुंति=होय छे.	अणुत्तरे=(पांच) अनुत्तरमां
	इक्किक=एक एक.
	परिहाणी=उंछुं करवुं.

अर्थः-(ईसाणंत सुराणं के०) बीजा ईशान देवलोकना अंत सुधी जे भवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देव छे तेउनां शरीरोनी (उच्चत्तं के०) उंचाइ (सत्त रयणीउ हुंति के०) सात हाथनी होय छे. त्यारपछी "डुग डुग डुग चउ गेविज्ञणुत्तरे इक्किक परिहाणी" अनुक्रमे एकेक हाथ

टाफतां जवुं; जेमके सनत्कुमार अने माहेंद्र ए
ग के०) छिक पटले धले देवलोकमांना
वोनां शरीरोनी उंचाइनुं प्रमाण ठ हाथनुं होय
, ब्रह्म अने लांतक ए (जुग के०) बे देव-
ोकमां पांच हाथ होय ठे, शुक्र अने सहस्त्रार ए
जुग के०) बे देवलोकमां चार हाथ होय ठे, ए
ण छिक कही अने आनत, प्राणत, आरण तथा
च्युत ए (चउ के०) चार देवलोकमां त्रण हाथ
ोय ठे, (गेविज्ज के०) नव ग्रैवेयकमां बे हाथ
ोय ठे, अने (अणुत्तरे के०) पांच अनुत्तरवासी
वलोकमांना देवोनां शरीरोनुं प्रमाण एक हाथनुं
ोय ठे. ए रीते (इक्किक परिहाणी के०) एकेक
ाथनी हाणी करतां जवुं ते वारे पूर्वोक्त मान थाय.
सर्व जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीते
ुं ॥ ३३ ॥

हवे जीवोना आउखानुं वीजुं द्वार कहे ठे.

वावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स ति-
न्नि वाउस्स ॥ वास सहस्सा दस तरु,-
गणाण तेउ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥

[illegible]

ईसाणंत सुराणं रयणीओ सत्त हुंति
उच्चत्तं । दुग दुग दुग चउ गेविज्ज-
णुत्तरे इक्किक्क परिहाणी ॥ ३३ ॥

[illegible]

ईसाणंत (सुरा) ईशान देव- लोकना अंत सुधीना सुराणं-देवताओनी

रयणीओ-हाथ.	सत्त-सात.
हुंति-होय छे.	गेविज्ज (नव) ग्रैवेयक
दुग-बे.	अणुत्तरे (पांच) अनुत्तर
[illegible]	इक्किक्क-एक एक.
	परिहाणी-ओछुं करवुं.

अर्थः-(ईशानंत सुराणं केण) बीजा ईशान देव-लोकना अंत सुधी जे भवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देव छे तेओनां शरीरोनी [illegible]
ऊंचाइ (सत्त [illegible] केण [illegible]
होय छे. त्यारपछी [illegible]
णुत्तरे इक्किक्क [illegible]

घटाम्तां जवुं; जेमके सनत्कुमार अने माहेंद्र ए (डुग के०) द्विक एटले बन्ने देवलोकमांना देवोनां शरीरोनी उंचाइनुं प्रमाण ठ हाथनुं होय ठे, ब्रह्म अने लांतक ए (डुग के०) वे देव-लोकमां पांच हाथ होय ठे, शुक्र अने सहस्रार ए (डुग के०) वे देवलोकमां चार हाथ होय ठे, ए त्रण द्विक कह्यी अने आनत, प्राणत, आरण तथा अच्युत ए (चउ के०) चार देवलोकमां त्रण हाथ होय ठे, (गेविज्ज के०) नव ग्रैवेयकमां वे हाथ होय ठे, अने (अणुत्तरे के०) पांच अनुत्तरवासी देवलोकमांना देवोनां शरीरोनुं प्रमाण एक हाथनुं होय ठे. ए रीते (इक्किक्क परिहाणी के०) एकेक हाथनी हाणी करतां जवुं ते वारे पूर्वोक्त मान थाय. ए सर्व जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीते जाणवुं ॥ ३३ ॥

हवे जीवोना आउखानुं बीजुं द्वार कहे ठे.

वावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स ति-
न्नि वाउस्स ॥ वास सहस्सा दस तरु-
गणाण तेउ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥

इंदियाणं तु ॥ अउणापन्न दिणाइं,
चउरिंदीणं तु छम्मासं ॥ ३५ ॥

गाथा ३५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

साणि=वर्ष.	तु=तो.
रस=बार.	अउणापन्न=ओगणपचास.
াऊ=आयुष्य.	दिणाइं=दिवस.
इंदियाणं=बेइन्द्रिय जीवोनुं.	चउरिंदीणं=चतुरिन्द्रिय जीवोनुं.
इंदियाणं=तेइन्द्रिय जीवोनुं.	छम्मास=छ महीना.

अर्थः-(बिइंदियाणं बारसाऊ वासाणि के०) बेइन्द्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी बार वर्षनुं आयुष्य होय छे, (तिइंदियाणं तु के०) तेइन्द्रिय जीवोनुं आयुष्य (अउणापन्न दिणाइं के०) ओगणपचास दिवसनुं होय छे अने (चउरिंदीणं तु के०) चतुरिन्द्रिय जीवोनुं आयुष्य (छम्मासं के०) छ महीनानुं होय छे. तेमज ए सर्व जीवोनुं जघन्यथी पूर्ववत् अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे ॥ ३५ ॥ ए विकलेंद्रियनुं आयुष्य कह्युं.

हवे पंचेंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी आयुःप्रमाण कहे छेः-

सुर नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि
तित्तीसं॥चउपय तिरिय मणुस्सा,तिन्नि-

गाथा ३४ मीना नूटा शब्दना अर्थ.

वावीसा=वावीश.	सहस्सा=हजार.
पुढवीए=पृथ्वीकाय.	दस=दश.
सत्तय=सात.	तरु=प्रत्येक वनस्पति.
आउस्स=अप्काय.	गणाए=समूह.
तिन्नि=त्रण.	तेउ=तेउकाय.
वाउस्स=वायुकाय.	निरित्ता=त्रण अहोरात्र.
वास=वर्ष.	आऊ=आयुष्य.

अर्थः—(पुढवीए वावीसा के०) पृथ्वीकाय जीवं आयु उत्कृष्टथी वावीश हजार वर्षनुं होय छे, (सर आउस्स के०) अप्काय जीवोनुं आयु सात हज वर्षनुं, (वाउस्स तिन्नि के०) वायुकाय जीवं आयु त्रण हजार वर्षनुं, (तरुगणाए के०) प्रत्ये वनस्पतिसमूहनुं आयुष्य (दस सहस्सा व के०) दश हजार वर्षनुं होय छे अने (तेउ ति त्ताऊ के०) तेजस्काय जीवोनी उत्कृष्ट आयुःस्थि त्रण अहोरात्रनी होय छे अने ए बधा जीवो जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त आयुष्य होय छे ॥ ३४ ॥

हवे विकलेंद्रिय जीवोनुं आयु कहे छे.

वासाणि वारसाऊ, विंइंदियाणं ति-

इंदियाणं तु ॥ अउणापन्न दिणाइं,
चउरिंदीणं तु छम्मासं ॥ ३५ ॥

गाथा ३५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

ाणि=वर्ष.	तु=तो.
रस=बार.	अउणापन्न=ओगणपचास.
ाऊ=आयुष्य.	दिणाइं=दिवस.
इंदियाणं=बेइंद्रिय जीवोनुं.	चउरिंदीणं=चतुरिंद्रिय जीवोनुं.
इंदियाणं=तेइंद्रिय जीवोनुं.	छम्मास=छ महीना.

अर्थः—(बिइंदियाणं बारसाऊ वासाणि के०) इंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी बार वर्षनुं आयुष्य होय छे, (तिइंदियाणं तु के०) तेइंद्रिय जीवोनुं आयुष्य (अउणापन्न दिणाइं के०) ओगणपचास दिवसनुं होय छे अने (चउरिंदीणं तु के०) चतुरिंद्रिय जीवोनुं आयुष्य (छम्मासं के०) छ महीनानुं होय छे. तेमज ए सर्व जीवोनुं जघन्यथी पूर्ववत् अंतर्मुहूर्तनुं आयुष्य होय छे ॥ ३५ ॥ ए विकलेंद्रियनुं आयुष्य कह्युं.

हवे पंचेंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी आयुःप्रमाण कहे छेः-

सुर नेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि
तित्तीसं॥चउपय तिरिय मणुस्सा,तिन्नि-

गाथा ३४ मीना वृटा शब्दना

वावीसा=वावीश.	सहस्सा=ह
पुढवीए=पृथ्वीकाय.	दस=दश.
सत्तय=सात.	तरु=प्रत्येक
आउस्स=अप्काय.	गणाए=सम
तिन्नि=त्रण.	तेउ=तेउका
वाउस्स=वायुकाय.	तिरित्ता=त्र
वास=वर्ष.	आऊ=आउ

अर्थः—(पुढवीए वावीसा के०) पृ
आयु उत्कृष्टथी वावीश हजार वर्षनुं ह
आउस्स के०) अप्काय जीवोनुं आयु
वर्षनुं, (वाउस्स तिन्नि के०) वायुका
आयु त्रण हजार वर्षनुं, (तरुगणाए के०
वनस्पतिसमूहनुं आयुष्य (दस सहस्स
के०) दश हजार वर्षनुं होय छे अने (ते
त्ताऊ के०) तेजस्काय जीवोनी उत्कृष्ट आउ
त्रण अहोरात्रनी होय छे अने ए बधा
जघन्यथी अंतर्मुहूर्त आयुष्य होय छे ॥ ३४

हवे विकलेंद्रिय जीवोनुं आयु कहे छे

वासाणि वारसाऊ, विइंदियाणं ।

उत्कृष्टथी (तित्तीसं सागराणि के०) तेत्रीश सागरोपमनी होय छे. एटलुं आयुष्य पांच अनुत्तर विमानोना देवोनुं तथा सातमी नरकना जीवोनुं उत्कृष्टथी जाणी लेवुं अने (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवाला (तिरिय के०) तिर्यंच जीवोनुं तथा (मणुस्सा के०) सर्व प्रकारना माणसोनुं उत्कृष्टथी (तिन्निय पलिउवमा के०) त्रण पल्योपमनुं आयुष्य (हुंति के०) होय छे. एवा आयुष्यवाला जीवो देवकुर्वादिक देशोमां होय छे. अहीं पल्योपम तथा सागरोपमने विषे सूक्ष्मताथी अथवा विशेषण विशिष्टनुं ग्रहण कर्याथी देव तथा नारकीउनुं जघन्यथी आयुष्य दश हजार वर्षनुं होय छे, अने मनुष्य तथा तिर्यंच जीवोनुं जघन्यथी पूर्वनी पेठे अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे ॥ ३६ ॥

गर्भज अने संमूर्छिम ए बे प्रकारना (जलयर के०) जे जलचर जीवो छे, (उर के०) उदरथी चालनारा जे सर्पो छे, (भुयगाणं के०) भुजाथी चालनारा जे नोलिया प्रमुख जीवो छे, तेउनुं (परमाऊ के०) उत्कृष्टथी आयुष्य (पुव्वकोडीउ के०) पूर्व

कोमीनुं (द्दोइ के०) द्दोय छे. सित्तेर लाख अ
नप्पन हजार कोटि वर्षनो एक पूर्व थाय है
एवा एक कोटि पूर्वनुं आयुष्य जाणवुं. (पक्खी
के०) पक्षीउनुं (पुण के०) तेवी रीतेज (पलि
यस्स असंखजागो अ के०) पल्योपमना असंख्य
तमा जाग जेटलुं आयुष्य (जणिउं के०) कहे
छे. आ गर्जज तिर्यंचनुं आयुष्य जाणवुं. आ प्रक
रणमां संमूर्छिम स्थलचर तथा खेचरादि पंचेंद्रियो
उत्कृष्टथी आयु कह्युं नथी. पण बीजा ग्रंथोम
कहेलुं छे, ते आ प्रमाणः—'समुछि पणिंदि थलयर
नयर उरग नुयग जिठ्ठ ठिइ कमसो; वास सह
स्साचुलसी, बिसत्तरी तिपन्न बायाला ॥१॥' इति ॥२
) हवे सूक्ष्मादि जीवोना आयुष्यनुं प्रमाण कहे छेः-

सवे सुहुमा साहा,—रणा य समुछि-
मा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेण,
अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥ ३० ॥

गाथा ३० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

वे-सर्वे.	साहारणा=साधारण.
हुमा=सूक्ष्म.	समुछिमा=संमूर्छिम.

ा=मनुष्य.
ग्रं=जघन्यथी.
हुत्तं=अंतर्मुहूर्त्त.
चिय=मात्र.
जियंति=जीवे छे.

प्रर्थः—(सव्वे के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउ-
, वायुकाय तथा वनस्पतिकाय, ए सर्वे
हुमा साहारणा य के०) सूक्ष्म तथा बीजा
ारण एटले बादर निगोदरूप जे अनंतकाय
ो छे ते अने (समुछिमा मणुस्सा य के०)
मूर्छिम मनुष्यो जे एकसो ने एक क्षेत्रोने विषे
पन्न थयेला गर्भज मनुष्योनांज मल मूत्र तथा
ादिकने विषे उत्पन्न थाय छे ते यथा (उक्कोस
१) उत्कृष्टथी तथा (जहन्नेणं के०) जघन्यथी
अंतमुहुत्तं चिय के०) एक अंतर्मुहूर्त्त मात्रज
जियंति के०) जीवे छे ॥ ३८ ॥

उपला बे द्वारमां जे कह्युं ते गाथा वडे
सूचवे छेः—

उंगाहणाउ माणं, एवं संखेवउं सम-
क्खायं ॥ जे पुण इत्थ विसेसा, विसेस
सुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥

गाथा ३९ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

उंगाहणा=अवगाहना.	जे=जे.
आउ=आयुष्य.	पुण=वळी.
माणं=प्रमाण.	इत्थ=अहीं.
एवं=एवी रीते.	विसेसा=विशेष.
संखेवर्ड=संक्षेपे करी.	सुत्ताउ=सूत्रोथी.
समक्खायं=कह्युं.	ते=ते.
	नेया=जाणी लेया.

अर्थः–(उंगाहणाउ माणं के०) जेने वि जीवनी स्थिति होय छे, जेमां जीव रहे छे ते अवगाहना कहीए, एवं जे प्रत्येक जीवनुं शरी तेना आयुष्यनुं प्रमाण (एवं के०) एवी री (संखेवर्ड के०) संक्षेपे करी (समक्खायं के० समाख्यातं एटले कह्युं, परंतु (जे पुण इत्थ के० अत्रे वळी जे कांइ देवलोकादिकने विषे प्रतरा आश्रित (विसेसा के०) विशेष अवगाहना त आयुना नेद छे (ते विसेस सुत्ताउ के०) विशेष सूत्र जे संग्रहिणी तथा प्रज्ञापनादिक सू छे ते थकी (नेया के०) जाणी लेवा ॥ ३९ ॥ ए री अवगाहना तथा आयुःस्थिति मळी बे द्वार कह्

हवे त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कहे छेः—

एगिंदिया य सव्वे, असंख उस्सप्पिणी सकायंमि ॥ उववज्जंति चयंति अ, अणंतकाया अणंताउ ॥ ४० ॥

गाथा ४० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

उस्सप्पिणी=उत्सर्पिणी.	चयंति=च्यवे छे.
सकायंमि=पोतानी कायाने विषे.	अणंताउ=अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी.
उववज्जंति=उपजे छे.	

अर्थः—(सव्वे एगिंदिया य के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय, ए जे पांच स्थावर एकेंद्रिय छे ते सर्व (असंख उस्सप्पिणी के०) असंख्य उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी सुधी (सकायंमि के०) तेज पोतानी कायने विषे (उववज्जंति के०) उत्पन्न थाय छे, अने (चयंति अ के०) मरणने पामे छे. अर्थात् तेज कायमां उत्पन्न थइने फरी त्यांज नाश पामे छे, तथा (अणंतकाया के०) अनंतकाय वनस्पति जीवो जे छे ते (अणंताउ के०) अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी यावत् स्वकायमां उत्पन्न थइने तेज कायमां नाश पामे छे ॥४०॥ एवी रीते एकेंद्रिय जीवोनी कायस्थिति

हवे बेंद्रियादि विकलेंद्रियनी कायस्थिति कहे छेः

संखिज्ज समा विगला, सत्तठ भवा पणिंदि तिरि मणुया ॥ उववज्जंति सकाए, नारय देवा अ नो चेव ॥ ४१ ॥

गाथा ४१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संखिज्ज समा=संख्यातां वर्ष सुधी	मणुया=मनुष्य.
विगला=विकलेंद्रिय जीवो.	सकाए=पोतानी कायाने वि
सत्तठ=सात अथवा आठ.	नारय=नारकीना जीवो.
भवा=भव.	देवा=देवो.
पणिंदि=पंचेंद्रिय.	नो=नहि; नथी.
तिरि=तिर्यंच.	चेव=निश्चे.

अर्थः–(विगला संखिज्ज समा के०) बेइंद्रि तेइंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए जे विकलेंद्रिय जी छे ते संख्यातां वर्ष सुधी (उववज्जंति सकाए के० उपपद्यंति स्वकाये एटले सकायने विषे उत्पन्न था अने च्यवे छे तथा (पणिंदि तिरि मणुया के० पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य ए बे जातिना जी ते नेराज नवपणे केगावेछे (सत्तठ भवा के० सात अथवा आठ भव करे छे. साते भव उत्कृष्ट संख्यातां वर्ष सुधीमां थइ शके छे अ

उत्कृष्ट असंख्याता वर्ष सुधीमां आठ जव यइ शके छे. एटले आठ जवमां पूर्व कोटी पृथक्त्व अने त्रण पल्योपम अधिक काल जाणी लेवो अने जघन्यथी सर्वत्र कायस्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणी लेवी. तथा (नारय देवा अ नो चेव के०) नारकी जीवो अने देवो मरण पामीने फरी तेज गतिमां उत्पन्न यता नयी एटले नारकी मरी फरी नारकीमां न उपजे अने देवता मरी फरी देवतामां न उपजे, अवश्य एक बे जव बीजी गतिमां करीने पत्नी ते गतिमां उपजे, तेम वली देवता मरी नरकमां पण न जाय अने नारकी मरी देवतामां पण न जाय, ए त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कह्युं ॥ १ ॥

हवे चोथुं प्राण द्वार कहे छेः–

दसहा जियाण पाणा, इंदि उसासाउ
जोगबलरूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो,
विगलेसु छ सत्त अठेव ॥ ४१ ॥
असन्नि सन्नि पंचिं,–दिएसु नव दस
कमेण बोधवा ॥ तेहिं सह विप्पओगो,
जीवाणं जणए मरणं ॥ ४२ ॥

हवे द्वींद्रियादि विकलेंद्रियनी कायस्थिति कहे छेः-

संखिज्ज समा विगला, सत्तठ नवा
पणिंदि तिरि मणुया ॥ उववज्जंति स-
काए, नारय देवा अ नो चेव ॥ ४१ ॥

गाथा ४१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संखिज्जसमा=संख्यातां वर्ष सुधी	मणुया=मनुष्य.
विगला=विकलेंद्रिय जीवो.	सकाए=पोतानी कायाने विषे
सत्तठ=सात अथवा आठ.	नारय=नारकीना जीवो.
नवा=नव.	देवा=देवो.
पणिंदि=पंचेंद्रिय.	नो=नहि; नथी.
तिरि=तिर्यंच.	चेव=निश्चे.

अर्थः-(विगला संखिज्ज समा के०) बेइंद्रिय तेइंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए जे विकलेंद्रिय जीव छे ते संख्यातां वर्ष सुधी (उववज्जंति सकाए के० उपपद्यंति सकाये एटले सकायने विषे उत्पन्न थाय अने चवे छे तथा (पणिंदि तिरि मणुया के० पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य ए बे जातिना जीव ते तेवाज नवपणे केटलावेळ (सत्तठ नवा के० सात अथवा आठ नव करे छे. साते नव ते उत्कृष्ट संख्यातां वर्ष सुधीमां थइ शके छे अ

त्कृष्ट असंख्याता वर्ष नुधीमां आठ जव थइ शके. एटले आठ जवमां पूर्व कोटी पृथक्त्व अने ण पल्योपम अधिक काल जाणी लेवो अने जघ-यथी सर्वत्र कायस्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणी वी. तथा (नारय देवा अ नो चेव के०) नारकी जीवो अने देवो मरण पामीने फरी तेज गतिमां उत्पन्न थता नथी एटले नारकी मरी फरी नार-कीमां न उपजे अने देवता मरी फरी देवतामां न उपजे, अवश्य एक वे जव बीजी गतिमां करीने पढी तें गतिमां उपजे, तेम वली देवता मरी नरकमां पण न जाय अने नारकी मरी देवतामां पण न जाय. ए त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कह्युं ॥ १ ॥

हवे चोथुं प्राण द्वार कहे वेः–

दसहा जियाण पाणा, इंदि उसासाउ जोगवलरूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अठेव ॥ ४२ ॥ असन्नि सन्नि पंचिं,–दिएसु नव दस कमेण वोधवा ॥ तेहिं सह विप्पओगो, जीवाणं नणए मरणं ॥ ४३ ॥

गाथा ४२ मीना वूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दश प्रकारना.	वलरूवा=बलरूप.
जियाण=जीवना.	एगिंदिएसु=एकेंद्रियने विषे.
पाणा=प्राण.	चउरो=चार.
इंदि=इंद्रियो.	विगलेसु=विकलेंद्रियने विषे.
उसास=श्वासोश्वास.	सत्त=सात.
आउ=आयुष्य.	अठेव=आठ.
जोग=योग.	

गाथा ४३ मीना वूटा शब्दना अर्थ.

असन्नि=असंज्ञी.	तेहिं=तेनी.
सन्नि=संज्ञी.	सह=साथे.
पंचिंदिएसु=पंचेंद्रियने विषे.	विप्पओगो=वियोग.
नव=नव.	जीवाणं=जीवने.
दस=दश.	भण्णए=कहेवाय छे.
कमेण=क्रमे करी.	मरणं=मरण.
बोधवा=जाणवा.	

अर्थः–(दसहा जियाण पाणा के०) जीवोना दश प्रकारना प्राण होय छे, ते कहे छे, (इंदि के०) इंद्रियो (उसास के०) श्वासोश्वास, (आउ के०) आयु तथा (जोगवलरूवा के०) योगनां वलरूप जाणवा. एटले स्पर्शनादि पांच इंद्रियो, उश्वो उश्वास निःश्वास,

सातमुं आयु तथा मन, वचन, काय, ए त्रण योगनां त्रण बल मली दश प्राण छे. तेमां (एगिंदिएसु के०) एकेंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु तथा कायबल, ए (चउरो के०) चार प्राण होय छे, अने (विगलेसु के०) विकलेंद्रिय एटले द्वींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (छ के०) छ प्राण होय छे. त्रींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (सत्त के०) सात प्राण होय छे. चतुरिंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (अठेव के०) आठ प्राण होय छे ॥ ४२ ॥

(असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु के०) असंज्ञी पंचेंद्रिय तथा संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने (नव दस के०) नव अने दश (कमेण के०) क्रमे करी बोधव्वा के०) जाणवा. एटले असंज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने एक मनोबल होतुं नथी, बाकीना नवे प्राणो होय छे अने संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने दशे प्राणो होय छे. ए प्राण जेने जेटला कह्या छे ते जीवने (

गाथा ४२ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दश प्रकारना.
जियाण=जीवना.
पाणा=प्राण.
इंदि=इंद्रियो.
ऊसास=श्वासोश्वास.
आउ=आयुष्य.
जोग=योग.
बलरूवा=बलरूप.
एगिंदिएसु=एकेंद्रियने विषे.
चउरो=चार.
विगलेसु=विकलेंद्रियने विषे.
सत्त=सात.
अट्ठेव=आठ.

गाथा ४३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

असन्नि=असंज्ञी.
सन्नि=संज्ञी.
पंचिंदिएसु=पंचेंद्रियने विषे.
नव=नव.
दस=दश.
कमेण=क्रमे करी.
बोधव्वा=जाणवा.
तेहिं=तेनी.
सह=साथे.
विप्पओगो=वियोग.
जीवाणं-जीवने.
भणए-कहेवाय छे.
मरणं-मरण.

अर्थः—(दसहा जियाण पाणा के०) जीवोना द
...ना प्राण होय छे, ते कहे छे, (इंदि के०) इंद्रि
(... के०) श्वासोश्वास, (आउ के०) आ
... के०) योगनां बलरूप जाण
...इंद्रि पांच इंद्रियो, वली उसास निःश्वा

ानमुं आयु तथा मन, वचन, काय, ए त्रण
ोगनां त्रण बल मली दश प्राण छे. तेमां (एगिंदिएसु
े०) एकेंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, श्वासोश्वास,
ायु तथा कायबल, ए (चउरो के०) चार प्राण
ोय छे, अने (विगलेसु के०) विकलेंद्रिय एटले
ींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, श्वासोश्वास,
ायु, कायबल तथा वचनबल, ए (छ के०) छ प्राण
ोय छे. त्रींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणें-
द्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल,
ए (सत्त के०) सात प्राण होय छे. चतुरिंद्रिय
जीवोने स्पर्शनेंद्रिय रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षु-
रिंद्रिय, श्वासोश्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल,
ए (अठ्ठेव के०) आठ प्राण होय छे ॥ ४२ ॥

(असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु के०) असंज्ञी पंचें-
द्रिय तथा संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने (नव दस के०)
नव अने दश (कमेण के०) क्रमे करी योधवा
के०) जाणवा. एटले असंज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने
एक मनोबल होतुं नथी, बाकीना नवे प्राणो होय
छे अने संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने दशे प्राणो होय छे.
ए प्राण जेने जेटला कह्या छे ते जीवने (तेहिं

गाथा ४२ मीना तूटा शब्दना अर्थ.

दसहा=दश प्रकारना.
जियाण=जीवना.
पाणा=प्राण.
इंदि=इंद्रियो.
उसास=श्वासोश्वास.
आउ=आयुष्य.
जोग=योग.
बलरूवा=बलरूप.
एगिंदिएसु=एकेंद्रियने वि
चउरो=चार.
विगलेसु=विकलेंद्रियने वि
सत्त=सात.
अठेव=आठ.

गाथा ४३ मीना तूटा शब्दना अर्थ.

असन्नि=असंज्ञी.
सन्नि=संज्ञी.
पंचिंदिएसु=पंचेंद्रियने विषे.
नव=नव.
दस=दश.
कमेण=क्रमे करी.
बोधव्वा=जाणवा.
तेहिं=तेनी.
सह=साथे.
विप्पओगो=वियोग.
जीवाणं=जीवने.
भण्णए=कहेवाय छे.
मरणं=मरण.

अर्थः—(दसहा जियाण पाणा के०) जीवोना दश प्रकारना प्राण होय छे, ते कहे छे, (इंदि के०) इंद्रियो (उसास के०) श्वासोश्वास, (आउ के०) आयु तथा (जोगबलरूवा के०) योगनां बलरूप जाणवा. एटले स्पर्शनादि पांच इंद्रियो, छठो उश्वास निःश्वास,

जीमंमि=महा जयंकर.	जीवेहिं=जीवोने.
पत्तो=प्राप्त थाय छे.	अपत्त=नहीं पामेला.
अणंत=अनंती.	धम्मेहिं=धर्मने.
खुत्तो=वार.	

अर्थः—(अपत्तधम्मेहिं के०) जेठने धर्मनी प्राप्ति थइ नथी एवा (जीवेहिं के०) जीवोने (एवं के०) पूर्वे कही आव्या तेम आ (अणोरपारे के०) पारावार रहित एटले जेनी आदि पण नथी अने अंत पण नथी एवा (जीमंमि के०) महा जयंकर (संसारे सायरंमि के०) संसाररूप समुद्रने विषे (अणंत खुत्तो के०) अनंती वार प्राणवियोगरूप मरण (पत्तो के०) प्राप्त थाय छे ॥ ४४ ॥ ए चोथुं प्राण द्वार कह्युं.

एटले जे जीव धर्म नथी पाम्या ते जीव एकेकी योनिने विषे अनंतीअनंती वार मरण जीवन प्रत्ये करे छे. योनि एटले जे स्थानमां घणा जीवोनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस, एक स्पर्श, एटलां वानां सरखां बरोबर होय ते सर्व जीवनी एक योनि कहीए. ते योनिठं केटली छे ते सर्व जातिना जीवोनी जूदी जूदी संख्याए आगली गाथाए कहे छे.

सह् विप्पर्ठगो के०) ते प्राणोनो जे वियोग थाय ठे ते (जीवाणं मरणं जणए के०) जीवने मरण कहेवाय ठे. वली ज्यां उपजे त्यां एक आयु तो पूर्वला नवनुं बांधेलुं होय, बाकी बीजा सर्व नवा प्राण अने नवी पर्याप्ति उपजती वेलाए बांधे. इहां देव, नारकी, गर्नज तिर्यंच तथा मनुष्य ए जीवो संज्ञी पंचेंड्रिय कहेवाय ठे; अने संमूर्छिम तिर्यंच तथा संमूर्छिम मनुष्य असंज्ञी पंचेंड्रिय कहेवाय ठे. तेउमां संमूर्छिम मनुष्यो तो जाषारूप वाग्बलादिके करी रहित होवाथी तेउ सात तथा आठ प्राण वाला कह्या ठे ॥ ४३ ॥

अहीं एवी आशंका उत्पन्न थाय ठे के जीवने प्राण वियोगरूप जे मरण कह्युं ते केटला काल सुधी थया करे ठे ? एना निरासार्थे उत्तर कहे ठेः—

एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि
जीमंमि ॥ पत्तो अणंत खुत्तो, जीवेहिं
अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥

गाथा ४४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एवं=ए प्रकारे.
अणोरपारे=पारावार रहित.
संसारे=संसाररूप.
सायरंमि=समुद्रने विषे.

भीमंमि=महा भयंकर.
पत्तो=प्राप्त थाय छे.
अणंत=अनंती.
खुत्तो=वार.

जीवेहिं=जीवोने.
अपत्त=नही पामेला.
धम्मेहिं=धर्मने.

अर्थः—(अपत्तधम्मेहिं के०) जेउने धर्मनी प्राप्ति थइ नथी एवा (जीवेहिं के०) जीवोने (एवं के०) पूर्वे कही आव्या तेम आ (अणोरपारे के०) पारावार रहित एटले जेनी आदि पण नथी अने अंत पण नथी एवा (भीमंमि के०) महा भयंकर (संसारे सायरंमि के०) संसाररूप समुद्रने विषे (अणंत खुत्तो के०) अनंती वार प्राणवियोगरूप मरण (पत्तो के०) प्राप्त थाय छे ॥ ४४ ॥ ए चोथुं प्राण द्वार कह्युं.

एटले जे जीव धर्म नथी पाम्या ते जीव एकेकी योनिने विषे अनंती अनंती वार मरण जीवन प्रत्ये करे छे. योनि एटले जे स्थानमां घणा जीवोनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस, एक स्पर्श, एटलां वानां सरखां बरोबर होय ते सर्व जीवनी एक योनि कहीए. ते योनिउ केटली छे ते सर्व जातिना जीवोनी जूदी जूदी संख्याए आगली गाथाए कहे छे.

हवे पांचमुं योनि द्वार कहे छेः—

तह चउरासी लक्खा, संखा जोणीण हो-
इ जीवाणं॥ पुढवाईण चउण्हं, पत्तेयं
सत्त सत्तेव ॥ ४५॥ दस पत्तेय तरूणं,
चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ॥ विगलें-
दिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं
॥ ४६॥ चउरो चउरो नारय, सुरेसु मणु-
स्साण चउदस हवंति ॥ संपिंडिया य
सव्वे, चुलसी लक्खाउ जोणीणं ॥ ४७॥

गाथा ४५ मीना जूदा शब्दना अर्थ.

तह - तथा.	जीवाणं - जीवोनी.
चउरासी चोराशी.	पुढवाईणं - पृथ्व्यादिकनी.
लक्खा लाख.	चउण्हं - चारनी.
संखा संख्या.	पत्तेयं प्रत्येकनी.
जोणीण योनिनी.	सत्त सत्तेव सात सात.
होइ छे.	

गाथा ४६ मीना जूदा शब्दना अर्थ.

दस - दश.	चउदस चौद.
पत्तेय तरूणं प्रत्येक वनस्पति-	लक्खा लाख.
कायनी.	हवंति छे.

इयरेसु-इतर (साधारणने विषे). चउरो चार
विगलिंदिएसु-विकलेंद्रियने विषे. पंचिंदि-पंचेंद्रिय
दो दो बे बे. तिरियाणं तिर्यंचनी.

गाथा ४७ मीना शब्दना अर्थ.

चउरो चार.	संपिंडिया एकठी करतां
नारय नारकीनी.	सव्वे सर्वे.
सुरेसु देवताओनी.	चुलसी चोराशी.
मणुआण मनुष्यनी.	लक्खाउ लाख.
चउदस चौद.	जोणीणं-योनिओ.

अर्थः—(तह के०) तथा (जीवाणं के०) जीवोनी (जोणीण के०) योनिनी (संखा के०) संख्या (चउरासी लक्खा के०) चोराशी लक्ष (होइ के०) छे. जीवोनुं जे उत्पत्तिस्थानक ते योनि कहेवाय छे. तेओमां (पुढवाईण चउण्हं के०) पृथ्व्यादिक चार एटले पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय, ए चार प्रकारना जीवोनी (पत्तेयं के०) प्रत्येकनी (सत्त सत्तेव के०) सात सात लाख योनिओ जाणवी. एम चारेनी सर्व मळी अठ्यावीश लक्ष योनिओ थइ ॥४५॥ (पत्तेय तरूणं के०) प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोनी (दस के०) दश लक्ष योनिओ छे. (इयरेसु के०) इतरेषु एटले

एथी इतर जे साधारण वनस्पतिकाय जीवो छे तेनी (चउद्दस लक्खा के०) चौद लक्ष योनिउ (हवंति के०) छे. (विगलेंदिएसु दो दो के०) विकलेंद्रिय एटले बेइंद्रिय जीवोनी बे लाख, तेइंद्रिय जीवोनी बे लाख तथा चोरिंद्रिय जीवोनी बे लाख योनिउ जाणवी; अने (पंचिंदि तिरियाणं के०) पंचेंद्रिय तिर्यक् जीवोनी (चउरो के०) चार लक्ष योनिउ छे ॥ ४६ ॥ (चउरो नारय के०) नारकी जीवोनी चार लक्ष योनिउ छे, (सुरेसु चउर के०) देवोनी पण चार लक्ष योनिउ छे, (मणु आण के०) मनुष्य प्राणीउनी (चउदस हवंति के०) चौद लाख योनिउ छे. एवी रीते (संपिंडिया के०) बधीने एकठी करतां सरवाले (सवे के० सर्व (चुलसी के०) चोराशी (लक्खाउ के० लाख (जोणीणं के०) योनिउ थाय छे ॥ ४७ ॥

एवी रीते संसारी जीवो विषयक शरीरनुं मान आउखानी स्थिति, कायस्थिति, प्राण अने योनि ए पांच द्वार कह्यां.

हवे सिद्ध जीवो विषयक कहे छेः—

सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं

न पाण जोणीओ ॥ साइ अणंता तेसिं,
ठिई जिणंदाऽऽगमे भणिया ॥ ४८ ॥

गाथा ४८ मीना शब्दना अर्थ.

सिद्धाण सिद्धने.	साइ सादि.
नहि नथी.	अणंता अनंत.
देहो शरीर, देह.	तेसिं तेमनी.
न नथी.	ठिई स्थिति.
आउ आयु.	जिणंदाऽऽगमे जिनेंद्र प्रणीत सिद्धांतने विषे.
कम्मं कर्म.	भणिया कही छे.
पाण प्राण.	
जोणीओ योनि.	

अर्थः—(सिद्धाण देहो नहि पं०) सिद्ध परमात्माने शरीर नथी, माटे (न आउ कम्मं पं०) आयु अने कर्म पण नथी; अने ज्यां आयु न होय त्यां (पाण जोणीओ न पं०) प्राण अने योनि पण नथी. ए सर्वनो अभाव होवाथी कायस्थित्यादिकनो पण अभाव दर्शाव्यो. एम सर्व कर्मोपाधिविमुक्त अने जेओ लोकना अग्र भागने विषे स्थित छे (तेसिं पं०) ते सिद्ध जीवोनी (साइ अणंता ठिई पं०) सादि अनंत स्थिति, ते (जिणंदाऽऽगमे

के०) जिनेंद्र प्रणीत सिद्धांतोने विषे (भणि
के०) कही छे. एटले जे दिवसे अहींथी सिद्धमां ग
थाय ते दिवसे सिद्धने सादिपणुं कह्युं छे, अने प
त्यांथी च्यवननो अभाव होवाथी अनंतपणुं छे ॥ ૪૮

हवे फरी संसारी जीव विषे कहे छेः—

काले अणाइनिहणे, जोणी गहणंमि
भीसणे इह ॥ भमिया भमिहंति चिरं,
जीवा जिणवयणमलहंता ॥ ૪૯ ॥

गाथा ૪૯ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

काले-काळने विषे.
अणाइनिहणे=अनादिनिधन (आदि अने अंत रहित).
जोणी=योनि.
गहणंमि-गहन कुंज स्थाने.
भीसणे-भयने देनारी.
इह-अहींआं, आ संसारने विषे.
भमिया-भटकेला छे.
भमिहंति-भमशे.
चिरं-घणा काळ सुधी.
जिणवयणं-जिनवचनने.
अलहंता-नहीं पामेला.

अर्थः—आदि एटले प्रारंभ, निधन एटले नाश ए बे शब्दो विभक्ति विनाना होवाथी तेओनुं एक अन-दिन पद "आदिनिधन" एम थाय छे. ए पदनो अर्थ वृत्तिकार आम करे छेः—जेनो प्रारंभ अने नाश दीठामां आवतो नथी। तेने अनादिनिधन कहीए. ए

(धणाइनिहणे काले के०) अनादि अनंत कालने विषे (जिणवयणमलहंता जीवा के०) जिनोपदेशरूप जिनवचनने जे जीवो पाम्या नथी तेऊ (जोणी के०) चोराशी लाख संख्यावाली जे योनि तेणे करी (गहणं-मि के०) महा गहन दुःख देनारो तथा (जीमणे के०) भयने देनारो (इव के०) इहां वर्णव्यो एवो जे आ संसार तेने विषे (जमिया के०) अतीत कालने विषे नटकेला छे, अने फरी (जमिहंति चिरं के०) आगल आगामिक कालमां पण घणुं भ्रमण करशे ॥ ४९ ॥

हवे ग्रंथकार पोताना नामनी सूचना करता छता धर्मोपदेश कहे छेः–

ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते डुल्लहे वि
सम्मत्ते ॥ सिरि संति सूरि सिठे,
करेह जो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥

गाथा ५० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

ता=ते कारण माटे.	सम्मत्ते=सम्यक्त्व.
संपइ=सांप्रत काळे.	सिरि=श्री, ज्ञानादि लक्ष्मी.
संपत्ते=प्राप्त थयुं.	संति=शांति, रागादिकनो उपशम.
मणुअत्ते=मनुष्यपणुं.	सूरि=सूरि, पूजवायोग्य.
दुल्लहे=दुर्लभ.	सिठे=शिष्ट, उपदेश करेल
वि=पण.	

करेह=करो. | उज्जमं=उद्यम.
जो=हे जव्यजीवो. | धम्मे=धर्मने विषे.

अर्थः—(ता के०) ते पूर्वोक्त कारण माटे (के०) हे जव्यजीवो !(संपइ के०) सांप्रत आ यने विषे दश दृष्टांते करी (डुल्लहे के०) एवुं जे आ (मणुअत्ते के०) मनुष्यपणुं ते (के०) प्राप्त थयुं उतां अने (वि सम्मत्ते के०) पण डुर्लन जिनोक्त तत्वत्रयरुचिरूप प्राप्त थयुं उतां (सिरि संति सूरि सिठे के०) ज्ञानादि लक्ष्मी, शांति एटले रागादिकनो एर्जए करी जे सूरि एटले पूज्य एवा श्री तथा गणधर तेठे शिष्टे करेला ... उज्जमं करेह के०) धर्मने विषे उद्यम ... आ पद्यमां कविए पोतानुं नाम सूचव्युं ठे रीतेः—श्री शांति सूरि उपदेश करे ठे के ... उत्तम पुरुषोए आचरण करेला धर्मने विषे एवो अन्वय करवो. अथवा श्री शांति सूरि जगवद्धचनानुसारे धर्मोपदेशनो उद्यम आ ग्रंथ सिद्धांतमांथी कहाडेलो ठे ...

एसो ...

णणा हेउं ॥ संखित्तो उद्धरिओ, रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥ इति ॥

गाथा ५१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एसो=ए.	संखित्तो=संक्षेपथी.
जीवविचारो=जीवविचार.	उद्धरिओ=उद्धार कर्यो छे.
संखेवरुईण=संक्षेपरुचिवंतने.	रुद्दाओ=अतिशय विस्तारवाळा.
जाणणा हेउं=जाणवाने अर्थे.	सुयसमुद्दाओ=श्रुतसमुद्रथी.

अर्थः—(एसो के०) ए जे (जीवविचारो के०) जीवविचार कह्यो ते (संखेवरुईण के०) संक्षेपरुचि एटले स्वल्प मतिवाळा जीवोने (जाणणा हेउं के०) जाणवाने अर्थे (रुद्दाओ के०) जेना विस्तारनुं ग्रहण थइ शके नहीं एवा (सुयसमुद्दाओ के०) श्रुतसमुद्र थकी (संखित्तो उद्धरिओ के०) संक्षेपथी उद्धार करीने आ निबंध कर्यो छे. एथी आ सर्व जे कांइ कह्युं ते पोतानुं मनःकल्पित कह्युं नथी; परंतु सिद्धांतोमांथी उद्धार करीने कह्युं छे, एवी सूचना करी॥५१॥

॥ व्याख्यासहितं संपूर्णम् ॥

करेह्=करो. | उज्जमं=उद्यम.
जो=हे जव्यजीवो. | धम्मे=धर्मने विषे.

अर्थः–(ता के०) ते पूर्वोक्त कारण माटे (जो के०) हे जव्यजीवो !(संपइ के०) सांप्रत आ समयने विषे दश दृष्टांते करी (डुल्लहे के०) डुर्लज एवुं जे आ (मणुअत्ते के०) मनुष्यपणुं ते (संपत्ते के०) प्राप्त थयुं बतां अने (वि सम्मत्ते के०) तेमां पण डुर्लज जिनोक्त तत्त्वत्रयरुचिरूप सम्यक्त्व प्राप्त थयुं बतां (सिरि संति सूरि सिठे के०) श्री एटले ज्ञानादि लक्ष्मी, शांति एटले रागादिकनो उपशम, एउए करी जे सूरि एटले पूज्य एवा श्री तीर्थंकर तथा गणधर तेउं शिष्टे करेला उपदेशरूप (धम्मे उज्जमं करेह के०) धर्मने विषे उद्यम करो ॥ ५० ॥ आ पद्यमां कविए पोतानुं नाम सूचव्युं बे ते आवी रीतेः–श्री शांति सूरि उपदेश करे बे के शिष्ट एटले उत्तम पुरुषोए आचरण करेला धर्मने विषे उद्यम करो. एवो अन्वय करवो. अथवा श्री शांति सूरिए करेला जगवद्धचनानुसारे धर्मोपदेशनो उद्यम करो. हवे आ ग्रंथ सिद्धांतमांथी कहाडेलो बे एम कहे बेः–

एसो जीववियारो, संखेवरुइण जा-

जाणणा हेउं ॥ संखित्तो उद्धरिउं, रुद्दाउ सुयसमुद्दाउ ॥ ५१ ॥ इति ॥

गाथा ५१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एसो - ए.	संखित्तो - संक्षेपथी.
जीवविचारो - जीवविचार.	उद्धरिउं - उद्धार कर्यो छे.
संखेवरुईण - संक्षेपरुचिवंतने.	रुद्दाउ - अतिशय विस्तारवाळा.
जाणणा हेउं - जाणवाने अर्थे.	सुयसमुद्दाउ - श्रुतसमुद्रथी.

अर्थः—(एसो के०) ए जे (जीवविचारो के०) जीवविचार कह्यो ते (संखेवरुईण के०) संक्षेपरुचि एटले स्वल्प मतिवाळा जीवोने (जाणणा हेउं के०) जाणवाने अर्थे (रुद्दाउ के०) जेना विस्तारनुं ग्रहण थइ शके नहीं एवा (सुयसमुद्दाउ के०) श्रुतसमुद्र थकी (संखित्तो उद्धरिउं के०) संक्षेपथी उद्धार करीने आ निबंध कर्यो छे. एथी आ सर्व जे कांइ कह्युं ते पोतानुं मनःकल्पित कह्युं नथी; परंतु सिद्धांतोमांथी उद्धार करीने कह्युं छे, एवी सूचना करी॥५१॥

इति श्रीजीवविचारप्रकरणं प्राकृतव्याख्यासहितं संपूर्णम् ॥

॥ जीवविचारनुं स्वरूप लिख्यते ॥

॥ जीवना बे भेद ॥
१ संसारी जीव.
२ सिद्धना जीव.

॥ संसारीना बे भेद ॥
१ त्रस जीव.
२ स्थावर जीव.

॥ त्रसना चार भेद ॥
१ बेइंद्रिय जीव.
२ तेइंद्रिय जीव.
३ चौरिंद्रिय जी
४ पंचेंद्रिय जीव

॥ स्थावरना पांच भेद
१ पृथ्वीकाय जीव.
२ अप्काय जीव.
३ तेउकाय जीव.
४ वाउकाय जीव.
५ वनस्पतिकाय जी

१ ॥ पृथ्वीकायना भेद कहे छे ॥

स्फटिक रत्न, मणि, रत्न, परवालां, हींगलो, हर ताल, मणसिल, पारो, सोनुं आदि देइ सात धा ते सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, सीसुं, जसत, कथीर तथा लो उ, खरीमाटी, हरमजी, पाषाणना कटकानी सा मलेली धोली माटी, पलेवो पाषाण, अग्ररख, तु

माटी, खारो, माटीनी खाण, पाषाणनी खाण आदि देइ पृथ्वीकायना भेद जाणवा. १

२ ॥ अप्कायना भेद कहे छे ॥

भूमिनुं पाणी, वरसादनुं पाणी, ठारनुं पाणी, हिमनुं पाणी, करानुं पाणी, झाकळ हरितकायनुं पाणी, घनोदधिनुं पाणी आदि देइ अप्कायना भेद जाणवा. २

३ ॥ तेउकायना भेद कहे छे ॥

अंगारानो अग्नि, ज्वालानो अग्नि, भाठानो अग्नि, उल्कापातनो अग्नि, वज्रनो अग्नि, विजळीनो अग्नि आदि देइ तेउकायना भेद जाणवा. ३

४ ॥ वाउकायना भेद कहे छे ॥

उद्भ्रामक वायरो, उत्कलिक वायरो, मंडलिक वायरो, मोटो वायरो, शुद्ध वायरो, गुंजारव करे ते वायरो, घनवात, तनुवात आदि देइ वाउकायना भेद जाणवा. ४

५ ॥ वनस्पतिकायना बे भेद कहे छे ॥

१ साधारण वनस्पति. २ प्रत्येक वनस्पति.

१ ॥ साधारण वनस्पतिना भेद कहे छे ॥

सर्व जातना कंद, सर्व जातना अंकुरा, सर्व जातनां

कुंपल, पांच जातनी फुगी, सेवाल, नूमिफोमा, लीलु आदु, लीली हलदर ने लीलो कचुरो, गाजर, मोथ वथुलानी जाजी, थेग, सर्व जातना पाला, कोमल फल, सर्वे गुस ठे सिरा, सांध, पर्व जेनां एवां, थुहर कुंवार, गुगल, गलो प्रमुख ठेद्या थकी उगे तेने साधारण वनस्पति कहीए.

२ ॥ प्रत्येक वनस्पतिना नेद कहे ठे ॥

एक शरीरमां एक जीव होय जेने विषे तेने प्रत्येक वनस्पति कहीए. ते फल, फूल, ठाल, काष्ट, मूल पान ने बीज ए सात स्थानके एक एक जीव होय तेने प्रत्येक वनस्पति कहीए. ए पांच स्थावरना नेद कह्या.

॥ बेइंद्रियना नेद कहे ठे ॥

शंख, कोमीठं, गंडोला, जलो, चंदनक एटले स्थापनाचार्य, अलसीआ, लालीआ, लाकमाना कीमा, कीरमीआ, पूरा ए आदि देइ बेइंद्रिय जीव जाणवा.

॥ तेइंद्रियना नेद कहे ठे ॥

कानखजुरा, मांकण, जु, कीमी, उदेइ, मंकोमा, इल, घीमेल, सावा, गींगोमा, गधइआ, ठाणना कीमा, विष्टाना कीमा, धनेरीआ, कुंथुआ, गोपालीक, मेहना मामा आदि देइ तेइंद्रियना नेद जाणवा.

॥ चौरिंद्रियना भेद कहे छे ॥

विछु, ढिंकुण, भमरा, भमरी, तिड, माखी, डांस, मछर, कंसारी, करोलीआ आदि देइ चौरिंद्रियना भेद जाणवा.

॥ पंचेंद्रियना चार भेद कहे छे ॥

१ नारकी. २ तिर्यंच. ३ मनुष्य. ४ देवता.

॥ नारकीना सात भेद ॥

गोत्रनां नाम.	नारकीनां नाम.
रत्नप्रभा.	घमा.
शर्कराप्रभा.	वंसा.
वालुकाप्रभा.	सेला.
पंकप्रभा.	अंजणा.
धूमप्रभा.	रिठा.
तमःप्रभा.	मघा.
तमस्तमःप्रभा.	माघवती.

॥ तिर्यंचना त्रण भेद ॥

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर.

१ ॥ जलचरना पांच भेद कहे छे ॥

१ सुसुमार. २ मछ. ३ काचवा. ४ जलतं ५ मगरमछ.

२ ॥ स्थलचरना त्रण जेद ॥

उरःपरिसर्प.	सर्पनी जाति.
भुजपरिसर्प.	नोलिया, उंदर प्रमुख
चतुष्पद.	गाय, जेंस प्रमुख.

३ ॥ खेचरना बे जेद ॥

रोमज पंखी, चर्मज पंखी, मनुष्यलोकथी बहार समुद्र पंखी ने वितत पंखी.

मनुष्यनी मुख्य त्रण जाति छे. तेनी उत्तर जाति १०१ मनुष्यक्षेत्र जाणवां.

१५ पंदर कर्मजूमि. ३० त्रीश अकर्मजूमि. ५६ छप्पन अंतरद्वीप.

॥ हवे पंदर कर्मजूमि कहे छे ॥

पांच जरत. पांच ऐरवत. पांच महाविदेह.

॥ हवे त्रीश अकर्मजूमि कहे छे ॥

१ पांच हेमवंत क्षेत्र. २ पांच हिरण्यवंत क्षेत्र. ३ पांच हरिवर्ष क्षेत्र. ४ पांच रम्यक क्षेत्र, ५ पांच देवकुरु क्षेत्र. ६ पांच उत्तरकुरु क्षेत्र.

॥ हवे छप्पन अंतरद्वीप कहे छे ॥

चुलहेमवंत पर्वत अने शिखरी पर्वत, ए बे पर्व-

तनी पूर्वे ने पश्चिमे लवण समुद्रमां बे बे दाढाओ नीकली छे; एटले बंने पर्यंतनी बंने दिशिनी आठ दाढाओ थइ. ते एक एक दाढा उपरे सात सात द्वीप छे एटले आठ दाढा उपर छप्पन अंतरद्वीप थया.

ए प्रमाणे मनुष्यना १०१ भेद जाणवा.

॥ देवताना चार भेद कहे छे ॥

१ दश भवनपति. २ आठ व्यंतर तथा वाणव्यंतर. ३ पांच ज्योतिषी. ४ बे वैमानिक.

॥ दश भवनपतिनां नाम कहे छे ॥

१ असुरकुमार. २ नागकुमार. ३ सुवर्णकुमार. ४ विद्युत्कुमार. ५ अग्निकुमार. ६ द्वीपकुमार. ७ उदधिकुमार. ८ दिशिकुमार. ९ वायुकुमार. १० स्तनितकुमार.

॥ आठ व्यंतर तथा वाणव्यंतरना भेद कहे छे ॥

१ पिशाच. २ भूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किंनर ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.

१ अणपन्नी. २ पणपन्नी. ३ इसीवादी. ४ भूतवादी. ५ कंदित. ६ महाकंदित. ७ कोहंड. ८ पतंग.

॥ ज्योतिषीना पांच भेद कहे छे ॥

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

॥ वैमानिकना बे नेद कहे ठे ॥

१ कल्प ते बार देवलोक. २ कल्पातीत ते नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमान.

॥ कल्प ते बार देवलोकनां नाम कहे ठे ॥

१ सौधर्म. २ ईशान. ३ सनत्कुमार. ४ माहेंद्र. ५ ब्रह्म. ६ लांतक. ७ शुक्र. ८ सहस्त्रार. ए आनत. १० प्राणत. ११ आरण. १२ अच्युत.

॥ कल्पातीत ते नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमान ॥

॥ नव ग्रैवेयकनां नाम कहे ठे ॥

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिबंध. ३ मनोरम. ४ सर्वतोभद्र. ५ विशाल. ६ सुमनस. ७ सौमनस. ८ प्रीतिकर. ए आदित्य.

॥ पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे ठे ॥

१ विजय. २ वेजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

॥ ए संसारी जीवोना नेद कह्या ॥

॥ हवे सिद्धना पंदर नेद कहे ठे ॥

तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि देइ सिद्धना पंदर नेद जाणवा.

ए जीवनुं स्वरूप कह्युं.

॥ संमूर्छिमनुं शरीरमान कहे छे ॥

खेचर पंखीनुं तथा भुजपरिसर्पनुं धनुष्य पृथक्त्व शरीर जाणवुं.

उरःपरिसर्पनुं योजन पृथक्त्व शरीर जाणवुं. संमूर्छिम चतुष्पदनुं गाउ पृथक्त्व शरीरमान जाणवुं.

॥ गर्भज ॥

चतुष्पदनुं ठ गाउनुं शरीर होय.

मनुष्यनुं त्रण गाउनुं शरीर होय.

जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिकमां सौधर्म ने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवतानुं सात हाथनुं शरीर जाणवुं.

त्रीजे चोथे ठ हाथनुं शरीर.

पांचमे ठठे पांच हाथनुं शरीर.

सातमे आठमे चार हाथ; नवमे, दशमे, अग्यारमे, बारमे ए चार देवलोके त्रण हाथनुं शरीर, नव ग्रैवेयके बे हाथनुं शरीर. पांच अनुत्तर विमाने १. हाथनुं. ए शरीरनुं मान जाणवुं.

२ ॥ आउखानुं मान कहे छे ॥

पृथ्वीकायनुं बावीश हजार वर्ष, अप्कायनुं सात

॥ संमूर्छिमनुं शरीरमान कहे छे ॥

खेचर पंखीनुं तथा भुजपरिसर्पनुं धनुष्य पृथक्त्व शरीर जाणवुं.

उरःपरिसर्पनुं योजन पृथक्त्व शरीर जाणवुं संमूर्छिम चतुष्पदनुं गाउ पृथक्त्व शरीरमान जाणवुं

॥ गर्भज ॥

चतुष्पदनुं छ गाउनुं शरीर होय.

मनुष्यनुं त्रण गाउनुं शरीर होय.

भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिकमां सोधर्म ने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवतानुं सात हाथनुं शरीर जाणवुं.

त्रीजे चोथे छ हाथनुं शरीर.

पांचमे छठे पांच हाथनुं शरीर.

सातमे आठमे चार हाथ; नवमे, दशमे, अग्यारमे, बारमे ए चार देवलोके त्रण हाथनुं शरीर, नव ग्रैवेयके बे हाथनुं शरीर. पांच अनुत्तर विमाने एक हाथनुं. ए शरीरनुं मान जाणवुं.

२ ॥ आउखानुं मान कहे छे ॥

पृथ्वीकायनुं बावीश हजार वर्ष, अप्कायनुं सात

एकेंद्रियने चार प्राण.
बेइंद्रियने ठ प्राण.
तेइंद्रियने सात प्राण.
चौरिंद्रियने आठ प्राण.
असंज्ञी पंचेंद्रियने नव प्राण.
संज्ञी पंचेंद्रियने दश प्राण.
५ ॥ हवे योनिनुं द्वार कहे ठे ॥
सात लाख पृथ्वीकाय.
सात लाख अप्काय.
सात लाख तेउकाय.
सात लाख वाउकाय.
दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय.
चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय.
बे लाख बेइंद्रिय.
बे लाख तेइंद्रिय.
बे लाख चौरिंद्रिय.
चार लाख देवता.
चार लाख नारकी.

जुजपरिसर्पनुं बेंतालीश हजार वर्षनुं आयुष्य. एवी रीते आयुष्यनुं मान जाणवुं.

३ ॥ हवे कायनी स्थितिनुं द्वार कहे छे ॥

एकेंद्रिय असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पोतानी कायमां रहे.

अनंतकाय अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पोतानी कायमां रहे.

बेइंद्रिय, तेइंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए त्रणे विकलेंद्रिय संख्यातां वर्ष सुधी रहे.

मनुष्य तथा तिर्यंच सात आठ जव सुधी रहे.

नारकी मरी नारकी न थाय.

देवता मरी देवता न थाय.

४ ॥ हवे दश प्राणनुं द्वार कहे छे ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय.	६ श्वासोश्वास.
२ रसनेंद्रिय.	७ आउखुं.
३ घ्राणेंद्रिय.	८ मनबल.
४ चक्षुरिंद्रिय.	ए वचनबल.
५ श्रोत्रेंद्रिय.	१० कायबल.

ए दश प्राण जाणवा.

एकेंद्रियने चार प्राण.
बेंइंद्रियने ठ प्राण.
तेंइंद्रियने सात प्राण.
चौरिंद्रियने आठ प्राण.
असंज्ञी पंचेंद्रियने नव प्राण.
संज्ञी पंचेंद्रियने दश प्राण.

५ ॥ हवे योनिनुं द्वार कहे छे ॥

सात लाख पृथ्वीकाय.
सात लाख अप्काय.
सात लाख तेउकाय.
सात लाख वाउकाय.
दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय.
चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय.
बे लाख बेंइंद्रिय.
बे लाख तेंइंद्रिय.
बे लाख चौरिंद्रिय.
चार लाख देवता.
चार लाख नारकी.

चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय.

चौद लाख मनुष्यना भेद.

ए सर्व मली सर्व जीवोनी चोराशी लाख जीवायोनि थाय.

सिद्धना जीवोने देह नथी, आयु नथी, कर्म नथी, प्राण नथी, योनि नथी.

ए सिद्धना जीवोनी सादि अनंत स्थिति जाणवी.

इति जीवविचार प्रकरणना

बृहा बोलो समाप्त.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 239-240, Mandvi, Kakigalli, Bombay.